UNIVERSAL LIBRARY
OU_178695
UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 923.154 P91 B Accession No. G.H. 2633

Author प्रसाद, राजेन्द्र

Title भारत के राष्ट्रपति डा. राजेन्द्रप्रसाद द्वारा दिये गये महत्वपूर्ण संदेश जून 1952—दिसंबर ?

This book should be returned on or before the date last marked below.

भारत के राष्ट्रपति

डा० राजेन्द्र प्रसाद

द्वारा दिये गये

महत्त्वपूर्ण सन्देश

(जून १९५२—दिसम्बर १९५४)

सुपरिनटेन्डेंट, प्रेसिडेन्ट्स प्रैस द्वारा मुद्रित ।

विषय सूची

संख्या	सन्देश	पृष्ठसंख्या
१.	गाधी जी के जन्म दिवस पर	१
२.	गाधी जयन्ती के अवसर पर	१
३,	सन्त विनोवा के प्रति	२
४.	रवीन्द्र टैगोर के जन्म दिवस पर	४
५.	पं० गोविन्द वल्लभ पन्त के जन्म दिवस पर	४
६.	श्री गोपीनाथ बारदोलाई के प्रति	५
७.	सुश्री चन्दा बाई के प्रति	६
८.	एक साहित्य सेवी के प्रति	६
९.	बाबा खड़क सिह के प्रति	७
१०,	श्री विपिन बिहारी चौधरी के प्रति	७
११.	पं० नेकी राम शर्मा के प्रति	८
१२.	हरिजन आश्रम, प्रयाग के वार्षिकोत्सव के अवसर पर	९
१३.	राजस्थान सेवा संघ के उत्सव पर	१०
१४.	मध्य प्रदेश में मद्य निषेध सप्ताह	१०
१५.	अहिसा दिवस	११
१६.	दलितो की सेवा	११
१७.	गया भूदान सम्मेलन के अवसर पर	११
१८.	पंजाब—पेप्सू भूदान सम्मेलन	१२
१९.	राजस्थान प्रान्तीय सर्वोदय सम्मेलन के अवसर पर	१२
२०,	भारत सेवक समाज महासम्मेलन के अवसर पर	१२
२१.	बम्बई में खादी संग्रहालय का उद्घाटन	१३
२२.	"भारत सेवक" के प्रथम अंक के लिए संदेश	१३
२३.	"जीवन साहित्य" के खादी विशेषाक में	१४
२४.	अहिसा का महत्व	३६
२५.	ग्राम विश्वविद्यालय	१७

संख्या	सन्देश	पृष्ठसंख्या
२६.	कस्तूरबा स्मारक निधि	१७
२७.	सस्ता साहित्य मंडल	१८
२८.	कुष्ठ रोग का निवारण	१८
२९.	बिहार बालकन-जी बाड़ी	१९
३०.	आयुर्वेद महासम्मेलन	१९
३१.	हरिजन उद्धार	२०
३२.	हरिजन सम्मेलन को सन्देश	२०
३३.	महावीर निर्वाणोत्सव	२१
३४.	गीता का महत्व	२२
३५.	"उदय" के लिए सन्देश	२२
३६.	श्रद्धानन्द अनाथ महिलाश्रम की रजत जयन्ती के अवसर पर	२२
३७.	क्वीन मेरी टेक्नीकल स्कूल, किरकी का वार्षिकोत्सव	२३
३८.	बच्चों की पत्रिका	२४
३९.	विद्या मन्दिर का स्थापना दिवस	२४
४०.	प्रादेशिक सेना सप्ताह के उद्घाटन के समय	२५
४१.	मध्यभारत	२६
४२.	राजस्थान	२७
४३.	हिमाचल प्रदेश	२७
४४.	आन्ध्र राज्य के उद्घाटन के अवसर पर सन्देश	२८
४५.	नौसेना के वार्षिक समारोह के अवसर पर	२९
४६.	स्वाधीनता दिवस के अवसर पर	३०
४७.	गणराज्य दिवस पर सन्देश	३१
४८.	देश से बाहर रहने वाले भारतीयों के लिए सन्देश	३२
४९.	भारतीय लोक कला मंडल	३४
५०.	राष्ट्र भाषा प्रचार समिति	३४
५१.	वैदिक रिसर्च इंस्टीट्यूट	३४
५२.	राजापुर के शिष्टमंडल के प्रति	३५
५३.	वनस्थली विद्यापीठ	३५

संख्या	सन्देश	पृष्ठसंख्या
५४.	गुजराती साहित्य परिषद	३६
५५.	मैरिस कालिज की रजत जयन्ती	३६
५६.	उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन	३७
५७.	पश्चिम बंग राष्ट्रभाषा प्रचार समिति	३८
५८.	पंजाबी के वयोवृद्ध कवि	३९
५९.	भारतीय हिन्दी परिषद	३९
६०.	पोद्दार अभिनन्दन ग्रन्थ	४०
६१.	चित्रकला संगम द्वारा आयोजित प्रदर्शनी	४१
६२.	बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन	४१
६३.	कालिदास जयन्ती के अवसर पर	४२
६४.	हिन्दुस्तानी एकेडमी की रजत जयन्ती	४३
६५.	ब्रज साहित्य मंडल को सन्देश	४३
६६.	कुरुक्षेत्र संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना के अवसर पर	४४
६७.	कुशीनगर में महाविद्यालय की स्थापना	४५
६८.	अखिल भारतीय हिन्दी दिवस	४६
३९.	मराठी साहित्य सम्मेलन को सन्देश	४६

राष्ट्र सेवियों को श्रद्धांजलि

गांधीजी के जन्म दिवस पर

पूज्य महात्मा गांधीजी के शरीरत्याग को अभी चार ही वर्ष बीते हैं पर कभी कभी ऐसा मालूम होता है कि यह एक युग बीत गया हो। इसी बीचमें उनके सहकर्मी और अनुयायियों में से भी कुछ न कुछ चले गये और चले जा रहे हैं। जो रह गये हैं उनमें भी हम अपनी अपनी धुन में इतने व्यस्त हैं कि उनके कार्यक्रम को भी बहुत करके भूलने लग गये। उनके जन्मदिन को मनाने का उद्देश्य यह है कि हम एक बार फिर उन बातों को याद करें और उनके पथ पर चलने के लिये व्रती बनें। उन्हों ने अपने जीवन काल में इस दिन को अपने जन्मदिन के रूप में याद रखने के बदले चर्खा जयन्ती के समारोह का दिन मनाने का आदेश दिया था। इसका अर्थ यह था कि हम केवल उनके नाम को ही नहीं जपें बल्कि जो काम वह करना चाहते थे उस काम को करते रहें। उस कार्यक्रम का मुख्य अंग चर्खा था जिसके आधार पर वह समाज का नया संगठन करना चाहते थे। इसीलिये यह दिन इसी रूप में हम कई वर्षों से मनाते रहे हैं। आज उसका विशेष महत्व है क्योंकि उस कार्यक्रम का यह एक प्रतीक है और उस को मनाना और केवल एक ही दिन नहीं बल्कि दिन प्रति दिन कार्यरूप से इस में कुछ न कुछ लगे रहना आवश्यक है। मैं आशा करता हूं कि यद्यपि आज सुस्ती और उपेक्षा तक देखने में आती है, एक दिन वह अवश्य आयगा जब संसार और विशेषकर भारत इसके महत्व को समझेगा और यथासाध्य उस आदर्श को पूरा करने में प्रयत्नशील होगा।

* * * *

गांधी जयन्ती के अवसर पर

बहुत दिनों से हम महात्मा गांधी का जन्मदिन बहुत उत्साह से मनाया करते हैं। महात्मा जी स्वयं चाहते थे कि इस दिन को उनके जन्मदिवस के रूप में न मनाकर चरखा जयंती के रूप में मनाया जाय और अनेकानेक स्थानों में यह दिन चरखा कात कर और खादी का प्रचार कर के मनाया जाता है। इस साल भी इसे उत्साह के साथ मनाना परमावश्यक है।

खादी के लिये भारत सरकार की ओर से भी सहायता देने का निश्चय कर लिया गया है। खादी की एक बड़ी कठिनाई हमेशा से यह रही है कि इसके बनाने में खर्च कुछ अधिक पड़ने की वजह से वह मंहगी पड़ती है। अब सरकार की ओर से इसे सस्ती कर के लोगों में बेचने का प्रयत्न किया गया है। खादी ऐसे बहुतेरे लोगों को रोजी देती है जो किसी दूसरे प्रकार से उपार्जन नहीं कर सकते और इस लिये वह बेकारी दूर करने का एक बड़ा साधन हो जाती है। विशेष कर के इसी बात को ध्यान में रख कर खादी का प्रचार अत्यन्त आवश्यक माना गया है। पहले कांग्रेस के बड़े से बड़े कार्यकर्ता खादी लेकर दूसरों के यहां प्रचार के विचार से बेचा करते थे। अब इसकी बिक्री में किसी प्रकार की बाधा नहीं है, बल्कि सब ओर से इसको प्रोत्साहन मिल रहा है। इसलिये खादी बोर्ड ने लोगों की सुविधा के लिये उपाय निकाले हैं जिस में लोग अपनी पसन्द के अनुसार जब चाहें और जैसी खादी चाहें ले सकें और साथ ही जयंती के अवसर पर उनको यह देखने को मिल जाये कि कितनी खादी बिकी। इसलिये बोर्ड की ओर से हुंडी बेची जायेगी जिसे लोग खरीद सकते हैं और एक या कई बार करके उसके बदले में उतनी रक़म की जैसी चाहें खादी ले सकते हैं। इस मर्तबे इस जयंती के अवसर पर इस तरह से एक करोड रुपये की खादी बेचने का निश्चय किया गया है।

आशा है सभी देशप्रेमी इसमें सहायता कर के खादी के प्रचार में सहायक बनेंगे और यश के भागी होंगे।

* * * *

सन्त विनोबा के प्रति

भारतवर्ष में और विशेष करके महाराष्ट्र में सन्तों की परम्परा बहुत दिनों से चली आ रही है। उन्होंने अपने समय और कार्यक्षेत्र में बड़े सामाजिक और दूसरे प्रकार के उथल पुथल बार बार किये। आज की हमारी जो सामाजिक स्थिति है और जिस प्रकार से गांव गांव में और घर घर में धार्मिक भावनाएं किसी न किसी रूप में पाई जाती हैं, इसका श्रेय बहुत करके संतों और उनकी वाणियों को है। केवल धार्मिक जीवन में ही नहीं, अपने

समय की राजनीति में भी उनका बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है, पर चाहे सामाजिक दृष्टि से देखा जाय अथवा राजनीतिक दृष्टि से, उनके सभी कामों की पृष्ठभूमि धार्मिक और आध्यात्मिक रही है। मैं धार्मिक शब्द को प्रचलित अंग्रेजी 'रिलिजियस' शब्द के अर्थ में यहा प्रयुक्त नहीं कर रहा हूं, यद्यपि धार्मिक और रिलिजियस दोनों शब्दों के धातुओं का अर्थ धारण करना अथवा बांधना अर्थात् एक साथ रखने का ही है। हमारे देश की संस्कृति में धर्म केवल सांप्रदायिकता के अर्थ में ही प्रयुक्त नहीं हुआ है। उसका अर्थ और क्षेत्र बहुत ही विस्तृत और एक प्रकार से मानव जीवन या यों कहें कि सृष्टि भर के लिये सार्वभौम रहा है। अतः यहा जीवन के प्रत्येक अंग और वर्ण को धार्मिक दृष्टि से ही देखा गया है। इसलिये उनका दृष्टिकोण मनुष्य के समस्त जीवन, ऐहिक और पारलौकिक, को अपने सामने रखता था और उनके सिद्धान्तों तथा सीखों का प्रभाव मनुष्य के सारे जीवन पर पड़ता था।

संत विनोबाजी इसी परम्परा के एक उदात्त उदाहरण हमारे सामने हैं। महात्मा गाधीजी भी उसी परम्परा के थे पर उनके जीवन में उनको राजनैतिक परिस्थितियों से इतना संघर्ष करना पड़ा कि हम अक्सर यह समझ बैठते हैं कि वह एक राजनैतिक क्रान्तिकारी मात्र थे। वास्तव में उनकी शिक्षा हमारे समस्त जीवन को प्रभावित करती है और यदि राजनैतिक परिस्थितिया जटिल न होतीं तो उनके काम भी उसी दृष्टि से देखे जाते और उनके जीवन का भी संतों जैसा ही मूल्याकन होता। संत विनोबाजी गाधीजी के साथ में रहे और उनके राजनैतिक कार्यक्रम में भी भाग लेते रहे पर वह विशेष करके जो धार्मिक अथवा आध्यात्मिक सत्य महात्मा गांधी बताना चाहते थे उसको ही अपने जीवन में उतारने में लगे रहे।

महात्माजी के शरीरोत्सर्ग के बाद देश की परिस्थिति को देखकर उन्होंने जो महत्व का काम समझा उसे ही अपने हाथों में लिया और जैसा उनके सारे जीवन से समझा जा सकता है वह केवल राजनैतिक अथवा सामाजिक धार्मिक मसाला नहीं है बल्कि मनुष्य के सारे जीवन को पुनःसु-संस्कृत और संगठित करने का एक नया तरीका है जो आज की परिस्थिति में उनको अनुकूल लगा। यही कारण है कि यद्यपि उन्होंने काम बहुत कठिन उठाया है पर उनको उसमें सफलता भी मिल रही है। यही कार्यक्रम अगर राजनैतिक पृष्ठभूमि में उठाया जाता तो हो सकता है उसमें ज़ोर ज़बरदस्ती से अधिक

सफलता मिलती पर वह अनेकों की आत्माओं को दबाकर और कुचलकर मिल सकती थी। वही काम अनेकों की आत्मा उन्नत और उदात्त बनाते हुए वह कर रहे हैं और करा रहे हैं। इसलिए मैं भूमिदान यज्ञ को जिसने अब संपत्तिदान और जीवनदान का रूप धारण करना आरम्भ कर दिया है, इस देश के लिए ही नहीं, मानव मात्र के लिए एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण और शुभ सूचक कार्यक्रम मानता हूँ: भूमिदान यज्ञ न केवल देश की सामाजिक और आर्थिक विषमता को दूर करने के लिए है बल्कि हृदय परिवर्तन द्वारा जीवन के हर क्षेत्र मे समता और सामंजस्य स्थापित कर मानव कल्याण के हितार्थ है। इसकी सफलता, उनकी तपस्या और उनके सहकर्मियों की तपस्या और सहयोग पर बहुत कुछ निर्भर करती है क्योंकि उनके ही द्वारा सर्वसाधारण में वह भावना जाग्रत होती है जो इस यज्ञ को पूर्ण कर सकती है।

* * * *

रवीन्द्र टैगोर के जन्म दिवस पर

गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर का जन्म दिवस इस देश के लोगों के लिए ही नहीं बल्कि विश्व के समस्त शिक्षित वर्ग के लिए एक पुण्य तिथि है। उस दिन भारत मे एक महान् आत्मा ने जन्म लिया था जिसकी साहित्यिक रचनाओं और कला कृतियों में मूक लोगो को वाणी के दर्शन हुए और तमग्रस्त आत्माओं को आलोक रूपी वरदान मिला। अपनी रचनाओं द्वारा गुरुदेव ने संसार में भारत का सिर ऊंचा किया और मानव के लिए प्रेरणा का नवस्रोत बहाया। इस शुभ अवसर पर मैं गुरुदेव के प्रति अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करता हूं और आपके आयोजन की सफलता की कामना करता हूं।

* * * *

पं० गोविन्दवलभ पन्त के जन्म दिवस पर

पिछले ४० वर्षों से पंडित गोविन्दवल्लभ पन्त की गणना उन यशस्वी और कर्मठ सार्वजनिक कार्यकर्ताओं मे होती आई है जिन्हें हम राजनीतिक भाषा में राष्ट्र के स्तंभ कहते हैं। आरंभ से ही कुमाऊं के पर्वतीय क्षेत्र की

गरीब जनता की सेवा के प्रति पन्तजी स्वाभाविक रूप से आकृष्ट हुए। कुछ वर्षों बाद उनके व्यक्तित्व, उनकी सेवा भावना तथा प्रतिभा ने उनके कार्यक्षेत्र को विस्तृत कर डाला और वे अपने प्रान्त के सर्वप्रथम नेताओं में गिने जाने लगे। पंतजी की प्रतिभा और योग्यता ने प्रान्तीय सीमाओं को भी स्वीकार नहीं किया। शीघ्र ही उन्हें राष्ट्रीय नेता के रूप में मान्यता मिली और गांधीजी द्वारा संचालित स्वातंत्र्य संग्राम के पंतजी प्रमुख सेनानी समझे जाने लगे। यह उचित ही है कि उत्तर प्रदेश में जबसे लोकप्रिय सरकार बनी है उसकी बागडोर पंतजी के हाथों में है। इस बात का विशेष महत्व है क्योंकि उत्तर प्रदेश भारतीय गणराज्य का सबसे बड़ा राज्य है।

देश के लिये, विशेषकर उत्तर प्रदेश के लिये, पंतजी की सेवाएं इतनी अधिक हैं कि अभिनन्दन ग्रन्थ की परिधि मे उन्हें बांधना सरल काम नहीं। परन्तु फिर भी यह स्वाभाविक है कि जनता अपने जननायक का आदर करे। इसलिये मैं इस आयोजन का हृदय से स्वागत करता हूं और पंतजी को श्रद्धाजलि भेंट करनेवालों की पंक्ति में सहर्ष शरीक होता हूं। मुझे पूरी आशा है कि भारत के नवयुवक पंतजी के जीवन का ध्यान से अध्ययन कर उससे सत्प्रेरणा ग्रहण करेंगे।

* * * *

श्री गोपीनाथ बारदोलाई के प्रति

श्री गोपीनाथ बारदलोई उन विभूतियों में से थे जिन्होंने निस्पृह और निःस्वार्थ भाव से अपने समस्त जीवन को जनसेवा के लिये समर्पित कर दिया था और अंग्रेजों की दासता से भारत को मुक्त करने के लिये हर प्रकार की यातना और कष्ट का सहर्ष आवाहन किया था। वे अपने कार्य में अत्यन्त दक्ष थे और गहरे लगन वाले थे, साथ ही उनमें अहंमन्यता तो लगभग थी ही नहीं। जब भारतीय स्वायत्त शासन की स्थापना हुई तो यह स्वाभाविक ही था कि वे प्रान्त के कर्त्ता-धर्त्ता बनें। उन्होंने इस भार को भी अत्यन्त योग्यता और कौशल से निभाया। दुर्भाग्यवश भारत के स्वतन्त्र होने के पश्चात् वे अधिक वर्ष जीवित न रहे और इस प्रकार जिस पौधे को उन्होंने बोया और सींचा था और जिसकी देखरेख के लिये वे अपने जीवन का प्रत्येक क्षण लगाते रहे

थे, उसकी वे स्वतन्त्रता युग में पर्याप्त दिनों तक सेवा नहीं कर सके। किन्तु फिर भी जो कुछ वे भारत और विशिष्टतया आसाम के लिये कर गये हैं वह उनके देशवासियों को स्मरणीय रहेगा और उनकी स्मृति सदा पूज्यनीय रहेगी।

* * * *

सुश्री चन्दाबाई के प्रति

सुश्री चन्दाबाई को अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने के विचार का मैं स्वागत करता हूं। वास्तव में, यदि अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने का अभिप्राय किसी व्यक्ति की साधना अथवा सार्वजनिक सेवा को मान्यता प्रदान करना है, तो मेरे विचार से सुश्री चन्दाबाई इस आदर की पूर्ण रूप से अधिकारिणी हैं। पिछले ३० वर्षों से उनके जीवन का ध्येय परोपकार, साहित्यसेवा तथा सत्प्रचार ही रहा है। उन्हीं के परिश्रम से आरा जिले में जैन बाला महिला विद्यापीठ की स्थापना हुई थी। इस आश्रम द्वारा बिहार के नारी समाज का उपकार हुआ है और महिलाओं में शिक्षा प्रचार की उन्नति हुई है। इस अवसर पर मैं अपनी ओर से चंदाबाई को बधाई देता हूं और अपनी शुभ कामनाएं भेजता हूँ।

* * * *

एक साहित्य सेवी के प्रति

यह जानकर मुझे खुशी हुई कि रांची जिले के लोग एक हिन्दी सेवी का अभिनन्दन कर रहे है। श्री राधाकृष्ण बहुत वर्षों से छोटा नागपुर में हिन्दी प्रचार का कार्य करते आ रहे हैं। किसी भी प्रकार के प्रदर्शन अथवा दिखावे से दूर रह कर उन्होंने इस दिशा में ठोस कार्य किया है, और इस क्षेत्र में राष्ट्रीय विचार धारा को प्रोत्साहन दिया है। ऐसे व्यक्ति का अभिनन्दन वास्तव में एक व्यक्ति का नहीं बल्कि उसके द्वारा किये गये महत्वपूर्ण कार्यों और सेवाओं का मान करना है। वे होनहार लेखकों में है और उनसे आशायें हैं।

इस अवसर पर मैं अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं, और आशा करता हूँ कि राधाकृष्ण जी की तरह छोटा नागपुर के दूसरे लोग भी हिन्दी की निःस्वार्थ सेवा में तत्पर रहेंगे।

* * * *

बाबा खड़कसिंह के प्रति

बाबा खड़कसिंह का जीवन सच्चे अर्थों में पूर्ण रूप से राष्ट्र सेवा का जीवन रहा है। देश में होने वाले राष्ट्रीय आन्दोलन से उनका सम्बन्ध आरम्भ से ही रहा है। वास्तव में, उनकी अपनी आत्मकथा भारतीय स्वतन्त्र्य आन्दोलन के इतिहास से इतनी अधिक संश्लिष्ट है कि उसे इस इतिहास का ही एक अंग कहना अत्युक्ति न होगा।

ऐसे समय में जब देश की राजनीति और राजनैतिक आन्दोलन के प्रति लोगों की आस्था इतनी लचीली थी कि बहुतेरे देशभक्तों के पांव उखड़ गये, बाबा खड़कसिंह उस परिस्थिति में भी अपने विचारों और विशुद्ध राष्ट्रीयता के प्रति अपनी आस्था में बराबर सुदृढ़ बने रहे। निःसन्देह वह जाति और राष्ट्र जिससे उनका सम्बन्ध है उन पर गर्व कर सकता है। मुझे विश्वास है कि निःस्वार्थ सेवा और त्याग के उनके आदर्श का स्वतन्त्र भारत के नागरिक अनुसरण करेंगे।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि बाबा खड़कसिंह के मित्रों और प्रशंसकों ने उनके सम्मान में एक अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करने का निश्चय किया है। इस सत्प्रयास का मैं स्वागत और सहर्ष समर्थन करता हूं।

* * * *

श्री विपिन बिहारी चौधरी के प्रति

श्री विपिन बिहारी चौधरी बहरे और गूंगे हैं पर उन्होंने बोलना सीख लिया और साथ ही चित्रकारी में भी अच्छी प्रगति की है। १९३८ में मेरी उनसे पहली मुलाकात हुई थी। मेरे सामने बैठे बैठे १५ मिनिट के अन्दर उन्होंने पेन्सिल से मेरा एक सुन्दर चित्र बना दिया। इस प्रकार के अनेकों

और चित्र दिखलाये जिनमें कुछ चित्र पूज्य महात्मा गाधीजी के थे, जो केवल स्मरण शक्ति से, दूसरे चित्र को देखकर नहीं, उन्होंने तैयार किये हैं। गूंगे बहरों की शिक्षा के लिये उड़ीसा मे स्थित एक स्कूल से भी उनका सम्बन्ध है जिसके द्वारा वे गूंगे बहरों की सेवा भी कर रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि अपने सेवाकार्य में वे सफल हों।

* * * * *

पं० नेकीराम शर्मा

पं० नेकीराम जी शर्मा से मेरा परिचय असहयोग आन्दोलन के आरम्भिक दिनों में ही हो गया था। उनमें देश और समाज की सेवा की अपूर्व लगन है और उन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन में भी प्रमुख भाग लिया है। समस्त देश और विशेष कर पंजाब की उन्होंने काफी तकलीफ उठा कर और त्याग के साथ सेवा की है। मुझे इस बात का हर्ष है कि उनके प्रति श्रद्धा प्रगट करने के लिये उन्हें अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जा रहा है, किन्तु उनके प्रति सच्चा सम्मान और श्रद्धा तो उस सेवा भाव को अपनाकर ही प्रगट की जा सकेगी जिससे कि वे स्वयं प्रेरित हैं।

* * * *

●

राष्ट्रीय विकास
तथा
रचनात्मक कार्य

हरिजन आश्रम, प्रयाग के वार्षिकोत्सव के अवसर पर

छूआछूत के कारण जो भेदभाव हिन्दुस्तान के हिन्दुओं में पैदा हो गया है उसको दूर करना महात्मा गाधीजी के कार्यक्रम का एक मुख्य अंग रहा है। बहुत दिनों से यह रूढ़ि हिन्दू समाज में चली आयी है कि कुछ लोग अछूत समझे जाते हैं। इस अस्पृश्यता के अनेक रूप हैं और समय और देश के हिसाब से यह रूप बदलता भी गया है। महात्मा गाधीजी का विचार था कि इसको निर्मूल कर देना चाहिये और अगर हिन्दू जाति और हिन्दू धर्म ने इस कलंक को कायम रक्खा तो हिन्दू जाति और हिन्दू धर्म के लिये ही सबसे बड़ा खतरा पैदा हो जायेगा। महात्मा गाधीजी के पहले भी सन्त महात्माओं ने अस्पृश्यता निवारण का प्रयत्न किया था पर गाधीजी ने इस प्रश्न को बहुत बड़ा महत्व दे दिया और अपने प्राण की बाजी भी उस पर लगा दी थी। आज हमारे देश के संविधान मे अस्पृश्यता मानना एक कानूनी जुर्म बना दिया गया है और उसको दूर करना हमारा एक ध्येय है। आज बहुतेरे लोग स्थान स्थान पर आश्रम बनाकर या और तरीकों से इसको हटाने में प्रयत्नशील हैं।

प्रयाग के ख्यातनामा स्व० मुंशी ईश्वर शरण ने अपने जीवन के अन्तिम कई वर्ष और सब काम प्रायः छोड़कर इसी काम में लगाए। उन्होंने प्रयाग में हरिजन आश्रम की नींव डालकर उस संस्था को अपने बच्चे की तरह पाला और बड़ा किया और आजकल तो उसका रूप एक बड़ी संस्था का रूप हो गया है। इसमे उनको बहुत लोगों से आर्थिक सहायता लेनी पड़ी और लोगों ने बड़ी प्रसन्नता से सहायता दी क्योंकि वे एक ऐसे व्यक्ति थे जो अपना प्रभाव दूसरों पर आसानी से डाल देते थे। संस्था अब अपने पांव पर खड़ी हो गयी है और सुन्दर काम कर रही है। उनके सुयोग्य पुत्र मुंशी शंकरशरण अपने पूज्य पिता की तरह इसके संचालन में हाथ बंटा रहे हैं। इस संस्था का उद्देश्य है कि हरिजन बालकों को वह केवल समाज में दाखिल ही नहीं कर दे बल्कि उनमें ऐसी योग्यता भी ला दे जिससे अपने जीवन निर्वाह के लिये वे आसानी से कुछ पैदा कर सकें और दूसरों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल सकें। आश्रम की ओर से एक पत्रिका निकालने का विचार किया गया है। मैं आशा करता हूं कि उसके द्वारा संस्था की और हरिजनों की और भी सेवा हो सकेगी।

* * * * *

राजस्थान सेवा संघ के उत्सव पर

राजस्थान समग्र सेवा संघ के तत्वावधान में आयोजित प्रान्तीय सर्वोदय सम्मेलन के अवसर पर मैं सम्मेलन के कार्यकर्ताओं तथा राजस्थान की जनता के लिये अपनी शुभ कामनाएं भेजता हूँ। देहात सुधार, ग्रामोद्योगों की उन्नति और ग्रामीण भाइयों की सेवा ऐसे आदर्श हैं जिनकी पूर्त्ति के बिना हमारा देश बहुत आगे नहीं बढ़ सकता। भारत के कल्याण के हेतु जो अनेक योजनाएं चालू की गई हैं, उपर्युक्त कार्यक्रम उन योजनाओं की शृङ्खला में एक आवश्यक कड़ी है। आज भी हमारे देश की लगभग तीन चौथाई आबादी ग्रामों मे बसती है, इसलिये ग्रामीण क्षेत्रों और वहा रहनेवाले लोगों के विकास के बिना समग्र देश की उन्नति संभव नहीं। मुझे आशा है कि आगामी सम्मेलन राजस्थान की जनता के लिये कल्याणकारी होगा। मैं इस सम्मेलन की सफलता की कामना करता हूँ।

* * * * *

मध्य प्रदेश में मद्यनिषेध सप्ताह

मेरा यह निश्चित मत है कि मद्यनिषेध या नशाबन्दी का काम उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कोई भी रचनात्मक कार्य। विशेषकर मध्य प्रदेश जैसे राज्य के लिए, जहां लाखों की संख्या में आदिवासी और पिछड़े हुए लोग रहते हैं, मदिरापान से जो हानि और बरबादी होती है, उसे विस्तार से समझाना और भी आवश्यक है। यदि प्रचार द्वारा जनता को यह बात समझाई जाय तो मुझे विश्वास है अधिकांश लोग मदिरा से परहेज करेंगे। इसलिए मध्य प्रदेश सरकार द्वारा आयोजित मद्यनिषेध सप्ताह का मैं स्वागत करता हूँ और आशा करता हूँ कि उनका यह सत्प्रयास सफल होगा।

* * * * *

अहिंसा दिवस

मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि अणुव्रत समिति, भारत सेवक समाज, क्वेकर सेन्टर आदि करीब एक दर्जन संस्थाओं ने मिलकर दिल्ली मे अहिसा दिवस मनाने का आयोजन किया है। युद्ध के शस्त्रास्त्र की दृष्टि से हम चाहे कितने ही आगे बढ़ गये हों, परन्तु अधिकाश लोग आज यह स्वीकार करते हैं कि विभिन्न वर्गों और देशों के बीच आपसी व्यवहार का आधार जब तक अहिसा नहीं होगा तब तक विश्व में सच्ची शान्ति स्थापित नहीं हो सकती। अहिंसा हमारे विचार और चिंतन का विषय होना चाहिये जिससे हम उसमे आस्था पैदा कर उसे जीवन में उतार सकें।

* * * * *

दलितों की सेवा

देश से अस्पृश्यता दूर करने के लिए आज और भी अधिक साहस और योग्यता से काम करने की आवश्यकता है। गांधीजी ने जो काम शुरू किया था वह अभी पूरा नहीं हुआ है। मुझे आशा है कि देश के अनेक युवक-युवती दलितों की सेवा और सुधार-मार्ग को अपना कर देश के दलितों के प्रति अन्याय और असमता को मिटा देंगे। जो इस शुभ काम में लगे हैं उनसे मेरा अनुरोध है कि वे उसे और भी उत्साहपूर्वक करते रहें।

* * * * *

गया भूदान सम्मेलन के अवसर पर

इस महायज्ञ की दूसरी आहुति आरम्भ हो रही है। यह पहले से कम कठिन नहीं है। जिस तरह ईश्वर ने पहले महायज्ञ में सफलता दी और दे रहा है, वैसे ही इसमें भी दे, यही मेरी मंगल प्रार्थना है।

* * * * *

पंजाब-पेप्सू भूदान सम्मेलन

जिस पुनीत उद्देश्य को लेकर पंजाब तथा पेप्सू विद्यार्थी भूदान सम्मेलन का आयोजन किया गया है वह प्रशंसनीय है। मुझे आशा है कि भूदान जैसे रचनात्मक तथा कल्याणकारी आन्दोलन में हमारे नवयुवकों का योगदान देश के और स्वयं विद्यार्थियों के हित में होगा। मैं सम्मेलन के लिये सफलता की कामना करता हूँ और यह आशा करता हूँ कि इस आयोजन द्वारा संत विनोबा के क्रान्तिकारी किन्तु अहिंसात्मक कार्यक्रम को उत्तर भारत में यथेष्ठ बल मिलेगा।

* * * * *

राजस्थान प्रान्तीय सर्वोदय सम्मेलन के अवसर पर

भारत की सर्वांगीण उन्नति के सम्बन्ध में मैं अपने विचार कई बार पहले भी व्यक्त कर चुका हूँ। मेरा यह निश्चित मत है कि यदि हमें अपनी राष्ट्र निर्माण की योजनाओं मे सफलता प्राप्त करनी है तो इन योजनाओं का केन्द्र बिन्दु ग्रामों को बनाना होगा। यद्यपि शहरों का भी अपना विशिष्ट महत्व है, फिर भी हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि आज भी प्रायः ८० प्रतिशत भारतीय जनता देहात मे रहती है। सर्वोदय कार्यक्रम द्वारा इस दिशा में हम काफी आगे बढ़ सकते है। इसलिये मैं राजस्थान प्रान्तीय सर्वोदय सम्मेलन का हृदय से स्वागत करता हूँ और यह आशा करता हूं कि यह सम्मेलन स्थानीय समस्याओं पर विचार विमर्श द्वारा, क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत गणतंत्र की सबसे बड़ी इकाई अर्थात् राजस्थान के लोगों का मार्ग प्रशस्त कर सकेगा।

* * * * *

भारत सेवक समाज महासम्मेलन के अवसर पर

हमारे निर्माण और जनकल्याण के कार्यक्रम में भारत सेवक समाज का विशेष महत्व है। एक गैर-सरकारी संस्था होने के नाते जनता का इससे निकट का सम्बन्ध है। जनता को जाग्रत तथा संगठित करने के कार्य में

भारत सेवक समाज की सफ़लता से निर्माण के हेतु चालू की गई सरकारी योजनाओं को निश्चय ही गति प्राप्त होगी और नया बल मिलेगा। मुझे आशा है कि जिस अभिप्राय से उक्त महासम्मेलन बुलाया गया है, संयोजकों को उसमें सफलता मिलेगी।

* * * * *

बम्बई में खादी संग्रहालय का उद्घाटन

अखिल भारतीय खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड की देखरेख मे खोले जाने वाला यह पहला संग्रहालय है, और मैं इसका हृदय से स्वागत करता हूँ। यह उचित ही है कि इस प्रकार का पहला संग्रहालय बम्बई में खोला जाय जहा इसके लिये उपयुक्त स्थान प्राप्त कर लिया गया है। इस संग्रहालय में खादी और ग्रामोद्योग के सुन्दर नमूने रक्खे जायेंगे।

देहाती उद्योगो के महत्व और इन्हें अपनाने की आवश्यकता पर मैं अपने विचार कई बार प्रकट कर चुका हूँ। यदि हम यह समझ लें कि खादी और दूसरे काम धन्धो पर हमारे लाखों देहाती भाइयों का गुजारा निर्भर है तो मेरा विश्वास है कि इन उद्योगों को प्रोत्साहन देने में सभी देशभक्त हिन्दुस्तानियों को प्रसन्नता होगी। मैं आशा करता हूँ कि बम्बई निवासी इस संग्रहालय से पूरा लाभ उठायेंगे और खादी बोर्ड का यह परीक्षण सफल होगा, जिससे भारत के दूसरे बड़े शहरों में भी इसी तरह के संग्रहालय खोलने की बोर्ड को प्रेरणा मिल सके।

* * * * *

"भारत सेवक" के प्रथम अंक के लिये सन्देश

अपनी गतिविधियों और संगठन सम्बन्धी समस्याओं के विवेचन तथा प्रकाशन के लिये भारत सेवक समाज ने एक पाक्षिक पत्र निकालने का जो निश्चय किया है इसके लिये मैं उन्हें बधाई देता हूं। भारत सेवक समाज की सभी गतिविधियों का योजना को अमल में लाने से गहरा सम्बन्ध है। पंच-वर्षीय योजना और उसके उद्देश्यों से जनसाधारण को परिचित कराने का

अत्यधिक महत्व है। मैं सोचता हूं यही प्रस्तावित पत्रिका का उद्देश्य भी है। हम सब को यह समझ लेना चाहिये कि दूसरे रचनात्मक कार्यों की तरह इस योजना का भविष्य भी इस बात पर निर्भर करेगा कि भारतीय जनता इसके सम्बन्ध में क्या सोचती है, और कहां तक जनता सरकार से स्वेच्छापूर्वक सहयोग की भावना से आगे बढ़ती है। अर्थशास्त्र, प्रशासन और विज्ञान के विशेषज्ञों पर निःसन्देह भारी दायित्व आता है और उन्हीं के प्रयत्नों द्वारा पंचवर्षीय योजना का वास्तविक रूप निर्मित होगा, परन्तु योजना की सफलता का अन्तिम फैसला जनसाधारण के हाथों में है।

योजना को कार्य रूप में लाने के सम्बन्ध में भारत सेवक समाज पर बहुत जिम्मेदारी आती है। यह गैर-सरकारी सस्था सरकार और जनता के बीच की एक लड़ी है। योजना के सम्बन्ध में कार्य करने वाले अधिकारियों को भारत सेवक के रूप में प्रचार और जनता में जानकारी प्रसारित करने का एक उत्तम साधन उपलब्ध होगा। इसलिये इस निश्चय का सभी स्वागत करेंगे। मेरा विश्वास है कि भारत सेवक जहां भारत सेवक समाज के लिये उपयोगी होगा, वहां इसके द्वारा पंच-वर्षीय योजना के सम्बन्ध में भी ठीक ठीक जानकारी का व्यापक से व्यापक प्रचार हो सकेगा।

भारत सेवक चिरायु हो, और इसके प्रकाशन का सत्प्रयास सफल हो, यही मेरी कामना है।

* * * * *

"जीवन साहित्य" के खादी विशेषांक में

एक समय था जब भारतवर्ष में केवल अपनी जरूरत के लिये ही नहीं बल्कि विदेशों में भेजने के लिये भी अच्छे से अच्छा कपड़ा चरखों और करघों पर तैयार होता था। चरखा चलानेवाली विशेषकर गावों की स्त्रिया होती थीं और करघे चलानेवाले कुछ बुनकर परिवार के लोग। उनके द्वारा किसानों को एक काम मिल जाता था जिसे वे या उनके घर की स्त्रियां, खेती और घर के दूसरे कामकाज से बचे हुए वक्त में किया करते थे। इससे

केवल उनको धंधा ही नहीं मिलता था बल्कि कपड़े खरीदने में जो पैसे लगते वे भी बच जाते थे। इसके अलावा अन्न और वस्त्र दोनों के सम्बन्ध में जब किसान एक प्रकार से स्वावलम्बी हो जाता था तो उसको अपने देश के दूसरे लोगों की तरफ इन चीजों के लिये देखने की जरूरत नहीं रह जाती थी। विदेशों को तो वह अपना माल भेजता था, उनकी तरफ माल के लिये टकटकी लगाने की कभी जरूरत हो ही नहीं सकती थी। पर नया युग आया, ब्रिटिश राज्य स्थापित हुआ, भाप और बिजली का आविष्कार हुआ, बड़े बड़े कारखाने विदेशों में विशेष करके इंग्लैंड में बने और वहा से कपड़ा तैयार होकर इस देश मे आने लगा और चरखे का काम आहिस्ते आहिस्ते प्रायः बन्द हो गया और करघेवालों को भी बड़ी बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इसी स्थिति में महात्माजी ने चरखे को पुनर्जीवित करने का निश्चय किया।

गांधीजी ने केवल भावुकता से ही प्रभावित होकर यह निश्चय नहीं किया बल्कि इस देश की परिस्थिति को देखकर जिसमें प्रायः १०० मे से ७०, ७५ आदमी गाव में रहते हैं और खेती से ही अपना गुजारा करते हैं और जिसमे उनका पूरा समय नहीं लगता और न जिससे उनकी इतनी आमदनी हो सकती है कि वे अपने कपड़े का खर्च निकाल सकें, इस आन्दोलन की नींव एक अकाट्य शास्त्रीय अर्थशास्त्र के नियमों पर रक्खी थी। वह स्थिति आज भी है। बड़े बड़े कारखानों से धंधा बढ़ता नहीं घटता है, अर्थात् कारखानों मे थोड़े मजदूर इतनी उत्पत्ति किसी भी वस्तु की कर लेते हैं जितनी हाथों से काम करनेवाले बहुत अधिक लोग मिलकर पूरी कर सकते हैं। यही वजह है कि कारखाने खुलते ही जा रहे हैं और बेकारी भी बढ़ती ही जा रही है।

इस समय भारत में इतना कपडा कारखानों मे तैयार हो रहा है कि मामूली तौर से लोगों की जरूरत पूरी हो जाये। तो भी इतनी अधिक बेकारी आज से पहले इस देश के लोगों ने शायद ही कभी महसूस की हो। इस बेकारी को दूर करने, बचे हुए पर जो आज यूं ही बरबाद कर दिया जाता है ऐसे समय को लेकर सूत और कपडा तैयार कर लेना, वही इस आन्दोलन का आधार है। इसलिये खादी को प्रोत्साहन देना जिसका अर्थ चरखे और करघे को प्रोत्साहन देना है, देश के लिये आवश्यक है और अब

जब सरकार से भी इसमें सहायता मिल सकती है तो यह और भी अधिक आवश्यक हो जाता है कि जनता अपनी ओर से इसमे पूरी मदद करने में किसी प्रकार का संकोच न कर ।

* * * * *

अहिंसा का महत्त्व

भारतवर्ष में अहिसा के प्रति श्रद्धा और धार्मिक प्रवृत्ति हजारों वर्षों से सर्वमान्य रीति से प्रचलित रही है । इसका एक फल यह देखा जाता है कि यहा करोड़ों ऐसे स्त्री पुरुष है जो किसी प्रकार की हत्या को बुरा मानते हैं और मास इत्यादि कभी नही खाते । महात्मा गाधीजी ने इसी प्रवृत्ति को सामाजिक सुधार और राजनीतिक व्यवहार में लाने का प्रयोग किया जिसका फल बहुत ही सुन्दर हुआ । आज की स्थिति संसार में ऐसी हो रही है कि हिसा के अनिष्ट फलों से वह ऊब करके अहिसा की ओर झुकना चाहता है, पर अभी उसे स्पष्ट मार्ग नहीं दीखता और इसलिये वह कदम नहीं बढ़ा सकता । भारतवर्ष अनुभव पाकर भी अन्य देशों की नाईं अभी भी भयभीत है और इसलिये वह भी स्वतन्त्र भारत की रक्षा के लिये अहिसा को नहीं अपना सकता । पर इसमें संदेह नही कि उसका विश्वास और रुख उस ओर है । यह जनमत और जनसाधारण का काम है कि निर्भय होकर भारत को इसके लिये तैयार कर दे कि वह अपनी सभी समस्याओं को सुलझाने के लिये अहिंसा को ही पर्याप्त और बलवती समझकर उसे पूरी तरह अपना लेवे । उस कार्य में आज जैसे समारोहों की जरूरत और उपयोगिता है और इसलिये मैं उसका स्वागत करता हूं और उसकी सफलता चाहता हूँ ।

राष्ट्रीय संस्थाओं के प्रति

ग्राम विश्वविद्यालय

[अक्टूबर, १९५२]

मुझे अत्यन्त हर्ष और साथ ही भरपूर सन्तोष है कि सेवाग्राम में ग्राम विश्वविद्यालय की स्थापना हो रही है। महात्मा जी ने जिस न्याय और समत्व-पूर्ण मानव समाज का चित्र हम सब के सामने रखा था उसको अमली जामा पहनाने के लिये उन्होंने अन्य बातों के साथ साथ बुनियादी तालीम पर बड़ा ज़ोर दिया था क्योंकि वह मानते थे कि हमारे नवयुवकों और नवयुवतियों की शिक्षा की ऐसी व्यवस्था होने पर ही वैसे समाज की स्थापना की जा सकेगी। इसी दृष्टि से उन्होंने बुनियादी तालीम के प्रबन्ध के लिये तालीमी संघ की स्थापना की थी। उसी बुनियादी तालीम के क्षेत्र को बढ़ाने के लिये और उच्च शिक्षा को भी उस आदर्श से अनुप्राणित करने के लिये इस ग्राम विश्वविद्यालय की स्थापना हो रही है। दुर्भाग्यवश अंग्रेजी राज्यकाल से विरासत में मिली हुई शिक्षा व्यवस्था हमारे नवयुवकों और नवयुवतियों को जनजीवन से अलग करके अपने ही घर में विदेशी बना देती है। अतः इस बात की आवश्यकता थी कि सेवाग्राम मे ऐसी शिक्षा संस्था हो जो इस क्षेत्र में दूसरी उच्च शिक्षा संस्थाओं के लिये प्रकाश-स्तम्भ का कार्य करे। मुझे पूरा भरोसा है कि श्री आर्यनायकम् और बहिन आशादेवी जैसे लगन वाले और श्रद्धावाले नायकों के दिग्दर्शन से सेवाग्राम विश्वविद्यालय ऐसा प्रकाश-स्तम्भ बनेगा। यह और खुशी की बात है कि जवाहरलाल जी इस विश्वविद्यालय का उद्घाटन करेंगे। इस संस्था की पूर्ण सफलता के लिये मैं अपनी हार्दिक सत्कामनायें भेजता हूँ।

कस्तूरबा स्मारक निधि

[२५ जून, १९५२]

श्री कस्तूरबा गान्धी राष्ट्रीय स्मारक निधि, बिहार शाखा की रिपोर्ट पढ़कर मुझे प्रसन्नता हुई और इस बात का संतोष हुआ कि काम अच्छी तरह से चल रहा है। मैं चाहता हूं कि वह काम जारी रहे और अगर यह कुछ वर्षों तक चलता रहा तो इसकी आवश्यकता और महानता लोगों को और भी ज्यादा मालूम हो जायगी। जब निधि की ओर से ७५ प्रति-शत खर्च मिलता है तो

२५ प्रति-शत उस स्थान में जहा काम होता है और अगर वहा नहीं हो सके तो प्रान्त में जमा करना कठिन नहीं होना चाहिये। लोगों को काम दिखलाना चाहिये और जब वे देख लेंगे और उनको संतोष हो जायगा तो मुझे पूरा विश्वास है कि दूसरे प्रभावशाली लोग इस काम मे पूरी मदद करेंगे। मैं जब कभी उधर आऊंगा तो वहां का काम प्रसन्नतापूर्वक देखूंगा। मुझे तो पूरा विश्वास है कि जो सद्उपयोगी और सुन्दर काम वहा हो रहा है वह पैसे की कमी से नहीं रुकेगा।

सस्ता साहित्य मण्डल

[५ जून, १९५२]

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि सस्ता साहित्य मंडल की रजत जयन्ती का समारोह मनाया जाने वाला है। मैं मंडल के काम में आरम्भ से ही दिलचस्पी लेता रहा हूँ और उसने जो हिन्दी साहित्य की वृद्धि और सेवा की है उसका मैं बहुत ही आदर करता हूं। इसलिये उसने अपने २५ वर्षों के जीवन काल में स्वयं जो कुछ किया है और हिन्दी संसार में जो कुछ काम हुआ है सब पर सिंहावलोकन करना और उससे आगे के लिये प्रेरणा लेना उचित होगा। मैं मानता हूँ कि इस समारोह का यही उद्देश्य है और इसलिये उसके साथ मेरी पूरी स्हानुभूति है और मैं आशा करता हूँ कि इसमें आप सफल होंगे।

काम बढ़ाने के लिये जो आपने मंडल के लिये सहायक और सहयोगी सदस्य बनाने की योजना बनायी है, वह भी मुझे अच्छी और उपयोगी मालूम पड़ती है। मैं आशा करता हूं कि उसमें भी आप पूरी तरह से सफल होंगे और उस सफलता के फलस्वरूप मंडल का काम आगे बढ़ेगा और साथ साथ हिन्दी की सेवा भी आप कर सकेंगे।

कुष्ठ रोग का निवारण

[३० मई, १९५२]

कुष्ठ का रोग अत्यन्त ही दुःखदायी होता है। उसके शिकार को जो कुछ शारीरिक पीड़ा होती है वह तो होती ही है, पर उसके साथ ही साथ

उसका सामाजिक जीवन भी समाप्त ही हो जाता है और आत्म-गौरव और आत्म-श्रद्धा तो उसमे बच पाती ही नहीं। छूत से फैलने के कारण यह समाज का भी बड़ा भारी शत्रु है। हमारे देश में कुष्ठ से पीड़ित लोगों की संख्या लाखों में है। अतः हम सब का यह धर्म है कि हम इस घृणित रोग को जड़मूल से मिटा देने के लिये पूरी कोशिश करें और हमें अपने इस प्रयत्न में तभी कामयाबी मिलेगी जब हमारे सारे देशवासी इस बारे में पूरा-पूरा सहयोग करेंगे।

बिहार बालकन-जी-बाड़ी

[१६५२]

मुझे यह जानकर खुशी है कि बिहार प्रान्तीय बालकन-जी-बाड़ी शाखा का प्रथम वार्षिक सम्मेलन पटना में हो रहा है और पिछले वर्ष में बालकन-जी-बाड़ी की बिहार शाखा ने बालकों की सेवा में अच्छी प्रगति की है। बालक ही भविष्य के निर्माता और उत्तराधिकारी हैं और उनके उचित विकास द्वारा ही देश और मानव जाति का कल्याण हो सकता है। अतः बालकन-जी-बाड़ी इस दिशा में जितने व्यापक क्षेत्र में कार्य कर सके उतने ही अधिक आनन्द की बात होगी। मेरी सत्कामना है कि सम्मेलन सफल हो और बालकन-जी-बाड़ी की बिहार शाखा को ईश्वर अगले वर्ष और भी अधिक सफलता से कार्य करने का उत्साह प्रदान करे।

आयुर्वेद महासम्मेलन

[२२ अक्टूबर, १६५२]

आयुर्वैदिक प्रणाली देश की सबसे प्राचीन प्रणालियों में से है और अब तक यह यहां की जनता की अपनी शक्ति के अनुसार सेवा करती रही है। किन्तु आधुनिक जगत में इस बात की अत्यन्त आवश्यकता है कि नई नई चीजों से इसका भंडार भरा जाये जिससे कि इसकी सेवा की शक्ति और बढ़ जाये। क्या मैं आशा करूं कि निखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद का ३८वा महासम्मेलन भारत के वैद्यों को इस खोज के पथ पर अग्रसर करेगा और उन्हें इस बात का प्रोत्साहन प्रदान करेगा कि वे आयुर्वैदिक प्रणाली को पुनः

वैसा सबल और सफल बनाये जैसी कि यह भगवान् धनवन्तरि के युग मे थी ? सम्मेलन की सफलता के लिये मैं अपनी शुभकामनाये भेजता हूं ।

हरिजन उद्धार

[१५, जनवरी १९५३]

हमारी भावी उन्नति और समृद्धि के लिए यह आवश्यक है कि हमारे देश में किसी प्रकार का सामाजिक अन्याय और असमता न रहे । हमारे संविधान ने भी हम पर यह कार्य भार रख दिया है कि हम देश मे से हर प्रकार की असमता को दूर कर दें । अतः हम सबका यह कर्त्तव्य और धर्म है कि अपने हरिजन भाइयों की सब प्रकार की सेवा करें और जिन बाधाओं और कठिनाइयों के कारण वे अन्य वर्गों के साथ साथ प्रगति नहीं कर पा रहे हैं उन्हें समूल दूर कर दे । हमारे हरिजन भाइयो को भी यह समझ लेना चाहिए कि जहा तक शासन का समबन्ध है वह उनकी कठिनाइयों को दूर करने के लिये बचनबद्ध और कटिबद्ध है और वह इनको दूर कर भी देगा । किसी प्रकार के सामाजिक रोग को दूर करने के लिए समय लगता है और इसलिये धैर्य-पूर्वक कार्य करने की आवश्यकता उसको सफल बनाने में होती है । अतः यह आवश्यक है कि हरिजन भाइयो को भी इस सत्य को पहचान कर अपनी कठिनाइयों को दूर करने के लिए शासन से सहयोग करना चाहिए और देश मे किसी प्रकार की कटुता नही फैलने देनी चाहिए । उसका अर्थ यह नही है कि इसमें विलम्ब किया जाय या किसी प्रकार का प्रमाद दिखाया जाय । डिप्रेस्ड क्लासेज़ लीग इस सम्बन्ध में बहुत सराहनीय कार्य करती रहेगी । डिप्रेस्ड क्लासेज़ लीग के आगामी वार्षिक सम्मेलन के लिये मैं अपनी सत्कामनायें भेजता हूँ और मुझे भरोसा है कि सम्मेलन उन्हें अपने कार्य में अग्रसर होने के लिए नव स्फूर्ति और नव उत्साह प्रदान करेगा ।

हरिजन सम्मेलन को सन्देश

[१९५३]

भारत के संविधान ने हम सब पर यह भार रखा है कि भारत में स्वतन्त्रता, समता और न्याय के आधार पर समाज की रचना की जाय । यह

उद्देश्य तभी पूरा होगा जबकि हरिजन भाइयों को भी व्यवहार में वे सब सुविधायें प्राप्त हो चुकेंगी जो उनके अन्य सहनागरिकों को प्राप्त हैं। मुझे यह जान कर प्रसन्नता है कि नागपुर में विधान सभाओं के हरिजन सदस्यों और हरिजन कार्यकर्त्ताओं का सम्मेलन हो रहा है जिसका उद्घाटन श्री जवाहरलाल नेहरू कर रहे हैं। मुझे यह आशा है कि सम्मेलन अपने विचार विमर्श से इस आन्दोलन को पूरा करने में तथा भारत मे सहयोगात्मक राज्य व्यवस्था कायम करने मे सहायता करेगा। मैं सम्मेलन की पूर्ण सफलता के लिये अपनी सत्कामना भेजता हूँ।

महावीर निर्वाणोत्सव

[२६ अक्टूबर १९५३]

भगवान महावीर का निर्वाणोत्सव एक ऐसा अवसर है जब कुछ क्षणों के लिये हमे अपने हृदयों को टटोलना चाहिये और अहिंसा के महान आदर्श के महत्व को समझने का यत्न करना चाहिए। दैनिक जीवन में अहिंसा को एक सहल सिद्धान्त के रूप मे सबसे पहले लागू करने का श्रेय भगवान् महावीर को ही है। इसलिये हम उन्हें अहिंसा के प्रवर्तक कह सकते हैं। सभी भारतवासियों को, चाहे वे भगवान महावीर के अनुयायी हों अथवा नहीं, इस महान देन पर गर्व है। आधुनिक युग में गांधी जी ने इसी पुराने सूत्र को हाथ मे लिया और इसके आधार पर राजनीति के क्षेत्र में एक नवीन विचारधारा को जन्म दिया। यद्यपि किन्हीं दुर्बलताओं के कारण संसार अहिंसा को सहसा अपना नहीं सका है, फिर भी यह हर्ष का विषय है कि गांधी विचारधारा के कारण बहुत से विभिन्न देशों के विचारशील लोग हिंसा के दूषित चक्र से ऊबकर अहिंसा में ही आशा की झलक देखते हैं।

मुझे बहुत खुशी है कि राजस्थान जैन युवक कांग्रेस ने महावीर निर्वाणोत्सव पर अहिंसा का प्रचार करने का निश्चय किया है। इस सत्प्रयास में मेरी शुभ कामनायें उनके साथ हैं।

गीता का महत्त्व

[दिसम्बर, १९५३]

इन्दौर नगर की गीता समिति के तत्वावधान में मनायी जाने वाली गीता जयन्ती के अवसर पर मैं उक्त संस्था से सम्बन्धित लोगों को बधाई देता हूं और उन्हें अपनी शुभ कामनाएं भेजता हूं। गीता की बहुत बड़ी विशेषता यह है कि वह अध्ययन और विचार का ही विषय नहीं, व्यावहारिक कर्म का विषय भी है। इसीलिये भगवद्गीता किसी युग विशेष का ग्रन्थ न होकर सभी युगों के लिये उपयुक्त है।

मुझे आशा है कि आगामी गीता जयन्ती से इन्दौर निवासी कर्तव्य-परायणता और निष्काम धर्म की ओर आकर्षित होंगे। मैं इस समारोह की सफलता की कामना करता हूं।

'उदय' के लिए सन्देश

[१६ अक्टूबर, १९५३]

ईडन स्कूल, हथुआ के छात्रों को मैं इस सन्देश द्वारा अपनी शुभ कामनाएं भेजता हूं। यह स्कूल चिरकाल से उत्तर बिहार के लोगों की सेवा कर रहा है। यह जानकर मुझे खुशी हुई कि स्कूल के छात्र "उदय" नामक एक पत्रिका निकालते हैं जिसका चर्म आदर्श है "जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"।

मुझे आशा है कि विद्यालय के सभी छात्र तथा अध्यापकगण इस आदर्श का व्यावहारिक रूप से अनुसरण करने का प्रयास करेंगे।

श्रद्धानन्द अनाथ महिला आश्रम की रजत जयन्ती के अवसर पर

[अक्टूबर, १९५३]

श्रद्धानन्द अनाथ महिला आश्रम, बम्बई के सम्बन्ध में कुछ शब्द कहने के अवसर का मैं स्वागत करता हूं। पतित और बेघरबार महिलाओं और

बच्चों की रक्षा के लिये बम्बई के हिन्दू समाज द्वारा खोली गई। यह पहली संस्था थी। मुझे इस संस्था को निकट से देखने का अवसर मिला है और मैं यह कह सकता हूँ कि बम्बई में इसके द्वारा एक बहुत बड़ी कमी की पूर्ति हुई थी।

श्रद्धानन्द महिला आश्रम जैसी जनसेवी संस्था का परिपक्व होना एक शुभ बात है। ठीक मानव जाति की भांति संस्थाओं की परीक्षा भी काल की कसौटी द्वारा होती है। उस मापदंड से देखते हुए हम कह सकते हैं कि इस आश्रम ने मानवता की अत्यधिक सेवा की है।

गत पच्चीस वर्षों के जीवन में इस संस्था ने ४००० से ऊपर जरूरत मन्द बच्चो और महिलाओं को प्रश्रय दिया है। इसने केवल यही नहीं किया, बल्कि उनकी शिक्षा और पेशों की ट्रेनिंग की भी व्यवस्था की है। पतित और पथभ्रष्ट लोगों को फिर से उनके पाव पर खड़ा करने और उन्हें अच्छे नागरिक बनाने से बढ़कर कोई काम श्रेष्ठतर नहीं हो सकता।

इस आश्रम की रजत जयन्ती के अवसर पर मैं इस संस्था की प्रबन्धक समिति को हार्दिक अभिनन्दन और शुभकामनाएं भेजता हूँ।

क्वीनमेरी टैकनीकल स्कूल, किरकी का वार्षिकोत्सव

[अक्टूबर, १९५३]

किरकी के विकलाग भारतीय सैनिकों के लिये क्वीनमेरी टैकनीकल स्कूल के वार्षिकोत्सव के अवसर पर अपनी शुभ कामनाएं भेजने और विद्यार्थियों को आशा के दो शब्द कहने में मुझे बड़ी खुशी हो रही है।

विकलांग सैनिकों का ध्यान रखना, मेरे विचार में, प्रत्येक देशभक्त हिन्दुस्तानी का कर्तव्य है। विकलांग व्यक्ति सभी पूर्णांग व्यक्तियों की सहानुभूति और दया के पात्र हैं। इसके अतिरिक्त हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि इन सैनिकों के अंग भंग ऐसे युद्ध में लड़ने के कारण हुए हैं जो किसी प्रकार भी वैयक्तिक नहीं कहा जा सकता।

ऐसे लोगों को व्यस्त रखना जिससे कि वे अपने आप को समाज का उपयोगी सदस्य समझ सकें और उन्हें पेशों की ट्रेनिंग के द्वारा उचित विषयान्तर उपलब्ध कराना सच्चे अर्थों में मानव सेवा है।

(२४)

बच्चों की पत्रिका

[सितम्बर, १९५४]

मैंने राजस्थान के बच्चों की हस्तलिखित मासिक पत्रिका को देखा और उसमें से कुछ चीजें पढ़कर मुझे बड़ी खुशी हुई। इस पत्रिका को देखकर मुझे विश्वास हो गया है कि बच्चों मे मौलिकता की कमी नहीं। पढ़ने के साथ साथ यदि उन्हें लिखने का अवसर भी मिले तो निश्चय ही उनकी मानसिक तथा बौद्धिक प्रवृत्तियों का विकास अधिक अच्छे ढंग से हो सकेगा। मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका इसी प्रकार निकलती रहेगी और अधिक से अधिक बच्चे इससे लाभ उठाने की चेष्टा करेंगे। पत्रिका की पहली वर्षगांठ के अवसर पर मैं उसके नन्हें संपादकों और पाठकों को अपनी शुभ कामनाएं और आशीर्वाद भेजता हूँ।

विद्या मन्दिर का स्थापना दिवस

[१ जून, १९५४]

विद्या मन्दिर, नैनीताल के स्थापना दिवस के अवसर पर मैं इस संस्था के बालकों, अध्यापकों तथा अधिकारियों को अपनी शुभ कामनाएं भेजता हूँ। इस विद्यालय के संम्बन्ध में जहां तक मेरी जानकारी है उसके आधार पर मैं कह सकता हूँ कि इसे अच्छे ढंग से चलाया जा रहा है। मुझे खुशी है कि यहां पाश्चात्य विचारों के साथ साथ भारत के परंपरागत शिक्षा संबन्धी आदर्शों को भी स्थान दिया गया है। जिन बच्चों को इस विद्यालय में पढ़ने का सुअवसर मिला है उनसे मुझे आशा है कि वे चरित्रवान और विद्वान होने के साथ साथ भारत के उत्तम नागरिक बनेंगे।

राष्ट्र के प्रति

(२५)

प्रादेशिक सेना सप्ताह के उद्घाटन के समय

[१९५२]

आज से प्रादेशिक सेना सप्ताह आरम्भ होता है। इसका उद्घाटन करते समय मुझे बहुत हर्ष हो रहा है। देश के सुरक्षा-कार्य में इस शहरी सेना का क्या स्थान है, इस संबन्ध में अपने देशवासियों से कुछ कहने के अवसर का मैं स्वागत करता हूं।

हमने आजादी प्राप्त कर ली है, परंतु इसे सुरक्षित बनाये रखने का काम हमारे सामने है। यह ठीक है कि हमारा राष्ट्र अहिंसावादी है और हम शान्ति के सच्चे भक्त हैं और हमारी नीति सभी से मैत्रीपूर्ण संबन्ध बनाये रखने की है। परंतु आज परिस्थितियां ऐसी हैं कि हमें सुरक्षा के लिये तैयार रहना पड़ता है। इसलिये प्रत्येक देश-भक्त भारतीय का यह कर्तव्य है कि वह देश की सुरक्षा के लिये जो कुछ भी कर सकता हो, करे। सुरक्षा का कार्य आज के युग में केवल सशस्त्र सेना अथवा सरकार पर ही नहीं छोड़ा जा सकता। जन-साधारण के लिये भी इसमें हाथ बंटाना आवश्यक है।

अपने घर-बार को सुरक्षित रखने का सबसे उत्तम उपाय यह है कि देश में सामूहिक रूप से सैनिक शिक्षा का प्रचार किया जाय ताकि जरूरत पड़ने पर सभी लोग इस कार्य को हाथ में ले सकें। देश के सारे नागरिक सिपाही नहीं बन सकते, परन्तु हिन्दुस्तान में काफ़ी जनशक्ति है। इस शक्ति के आधार पर सैनिक शिक्षा प्राप्त लोगों का सुरक्षित दल तैयार हो सकता है जो आवश्यकता पड़ने पर देश को उपलब्ध हो सकेगा। प्रादेशिक सेना का ऐसे सुरक्षित दल से ही अभिप्राय है।

सैनिक शिक्षा के अतिरिक्त प्रादेशिक सेना से सेना-संबन्धी व्यय में भी कमी हो सकती है। भारत जैसे विशाल देश के लिये अपनी आवश्यकताओं के अनुसार नियमित सेना रखना कठिन है। सुरक्षित दल के रहते हुए नियमित सेना की संख्या में कमी की जा सकती है।

प्रादेशिक सेना का संगठन १९४९ में किया गया था, परन्तु खेद है कि गत तीन वर्षों में उसने इतनी उन्नति नहीं की जितनी आशा की जाती थी। वैसे इसके यूनिट ठीक काम कर रहे हैं, परंतु टैक्नीकल यूनिटों के लिये और

आदमियों की ज़रूरत है। इन यूनिटों में उचित संख्या में रंगरूट भर्ती हो सकें इसके लिये छोटे-बड़े उद्योगपतियों का सहयोग आवश्यक है। अपने यहां के काम करने वालों को उन्हें प्रादेशिक सेना में शामिल होने के लिये सभी सुविधायें देनी चाहियें।

इस बात को उद्योगपतियों पर अनिवार्य रूप से लागू करने के लिये लोक सभा कानून बना चुकी है, परंतु स्वेच्छा से दिया गया सहयोग कहीं अधिक मूल्यवान होता है। और फिर इस काम में स्वयं उद्योगपतियों का भी लाभ है, क्योंकि सैनिक शिक्षा से कर्मचारी अधिक कुशल और अनुशासित बन जाते हैं। कर्मचारियों के इन गुणों से लाभ उठाना उद्योगपतियों का काम है।

मैं आशा करता हूं कि इस सप्ताह की कार्यवाही और प्रादेशिक सेना संबन्धी आवश्यक जानकारी के व्यापक प्रसार के फलस्वरूप इस सेना में अधिक से अधिक लोग भर्ती हो सकेंगे। ऐसा करने से वे सैनिक शिक्षा प्राप्त करके अपनी शिल्प-संबन्धी योग्यता में ही सुधार नहीं करेंगे बल्कि समय आने और आवश्यकता पड़ने पर देश सेवा के लिये भी तत्पर रह सकेंगे।

मध्यभारत

[१०-५-१९५२]

आधुनिक युग में आर्थिक और राजनीतिक दोनों ही दृष्टियों से यह आवश्यक है कि राज्य का क्षेत्र विस्तृत हो और उसकी जनसंख्या और आर्थिक साधन पर्याप्त अधिक हों। चार वर्ष हुए मध्यभारत की स्थापना इसी युग प्रेरणा के कारण हुई थी और अब मध्यभारत के शासकों और नागरिकों का यह धर्म है कि वे मध्यभारत को उन्नत करने के लिए पूर्ण निष्ठा से रचनात्मक और सृजनात्मक कार्य में लग जायें और सभी संकुचित विचारों और भावनाओं का परित्याग कर दें। प्रजातन्त्र का यही तक़ाज़ा है कि शासक और प्रजा में कोई अन्तर न रहे और जनता को यह विश्वास हो जाये कि इस नव राज्य की स्थापना से उसका जीवन पहले से अधिक सुखी हुआ है और हो अब अपनी सर्वतोमुखी उन्नति के लिये पहले से कहीं

अधिक सुविधा और स्वतन्त्रता है। मध्यभारत के स्थापना दिवस पर उसके सब वासियों का यह धर्म है कि वे अपने इस कर्तव्य को पहचानें और उसको पूरा करने में तन-मन-धन से लग जायें।

राजस्थान

[१६-३-५३]

अनेक शताब्दियों तक राजस्थान भारतीय राजतन्त्र की रक्षा के लिये संघर्ष करता रहा है और इस क्षेत्र मे उसने अपने शौर्य से अपनी कीर्ति की इतिहास मे स्थापना की। आज राजस्थान के सामने देश क अन्य भागों के समान ही प्रमुख समस्या आर्थिक हैं। उसको यह प्रयास करना है कि वहां की जनता का दुःख दारिद्रय शीघ्रातिशीघ्र दूर हो और जनता को वह आर्थिक वैभव प्राप्त हो जिसमें वह अपने जीवन को सुखी बना सके और सफलता से व्यतीत कर सके। यह कार्य इतना महान् है कि इसके लिये प्रत्येक राजस्थान-वासी को अपने भाइयों के साथ अपनी सारी शक्ति मिला कर कार्य करने पर ही सफलता मिल सकेगी। विशेषतया राजस्थान सरकार को इस बात का प्रबन्ध करना चाहिये कि राजस्थान का मरूभूमि क्षेत्र बढ़ने के बजाये निरन्तर घटता जाये। मेरी आशा है कि इस राजस्थान दिवस के अवसर पर राजस्थान के वासी इस बात की प्रतिज्ञा करेंगे कि वे अपनी सारी शक्ति राजस्थान और भारत की सेवा और समृद्धि के लिये अर्पण कर देंगे।

हिमाचल प्रदेश

[११-४-१६५३]

प्रकृति ने हिमाचल प्रदेश को वह सब कुछ दिया है जो समृद्ध और सुसंस्कृति जीवन के लिये मानव को आवश्यक होता है। पर्वतों की रमणीय छटा, कलकलनादिनी जलधारायें, स्वास्थ्य प्रद जलवायु, हरी भरी खेतीबाड़ी—वहां यह सब कुछ है। वहा के नरनारी न केवल सुन्दर, सुडौल और सुपुष्ट हैं वरन् परिश्रमशील भी हैं। अतः यदि वहां की सरकार और जनता मिलजुल कर और दृढ़ प्रतिज्ञा से उसको पुनः भारत का सुन्दरतम प्रदेश बनाने में जुट

जायें तो बहुत शीघ्र ही वह अपनी उस कीर्ति को पुनः प्राप्त कर लेगा जो यत्नों के इस देश की हमारे पुरातन काल मे थी। आज तो उस पर हमारे उत्तरीय सीमान्त प्रहरी होने का महान् दायित्व भी पड़ गया है। इस कर्त्तव्य को सफलता से निभाने के लिये भी यह आवश्यक है कि वह आर्थिक समृद्धि और सामाजिक न्याय का आगार हो।

क्या मैं आशा करूं कि अपने इस वार्षिक समारोह के अवसर पर वहा के राजनायक और जनसेवक पुनः यह व्रत लेंगे कि समय चक्र के कारण पीछे पड़ गये अपने इस प्रदेश को शीघ्रातिशीघ्र भारत का समृद्ध, आर्थिक और सास्कृतिक केन्द्र बनाने में वे अपनी सारी शक्ति और समय लगा देंगे। इस अवसर पर मैं हिमाचल की जनता और जन सेवियों को अपनी शुभ कामना भेजता हूँ और मंगलमय भगवान् से प्रार्थना करता हूँ कि वह उन्हे अपने चिर वाछित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये शक्ति और उत्साह प्रदान करे।

आन्ध्र राज्य के उद्घाटन के अवसर पर सन्देश

[१ अक्तूबर, १६५३]

यह बड़े हर्ष का विषय है कि आज आन्ध्र देश का उद्घाटन हो रहा है। इसके लिये आन्ध्र लोग बहुत समय से आन्दोलन करते आ रहे हैं। उनकी महत्वाकाक्षा के पूर्ण होने के इस अवसर पर मैं उन्हें अपनी शुभकामना और बधाई भेजता हूं।

किसी भी चीज का जन्म कष्टप्रद होता है और नवजात के पालन के लिये सतर्कतापर्ण सुश्रुषा तथा सावधानी आवश्यक है। हमारे संविधान के अन्तर्गत एक नये राज्य की स्थापना इस साधारण नियम का अपवाद नहीं हो सकती। इसलिये यह आवश्यक है कि सभी आंध्र लोग, और वे लोग भी जो आन्ध्र नहीं, यह महसूस करें कि नवजात राज्य की हर प्रकार से सहायता करना उनका कर्तव्य और गौरवपर्ण अधिकार है। इस सम्बन्ध में निःसदेह आन्ध्र लोगों का विशेष दायित्व है।

उनके लिये मेरा संदेश है कि वे पारस्परिक एकता स्थापित करें और नये राज्य को स्वावलम्बी बनाने और उसके अन्तर्गत आने वाले लोगों को सम्पन्न और सुखी बनाने के कार्य में जुट जायें। केवल नये राज्य से सम्बद्ध विचारपूर्ण आयोजन का किया जाना ही आवश्यक नहीं है, सभी भौतिक और आध्यात्मिक वस्तुओं में मितव्ययता की भी आवश्यकता है। हमें यह समझना चाहिये कि एक एक पैसा इस प्रकार से खर्च करें कि उसका व्यय अधिक से अधिक उपयोगी हो। हमें यह भी समझ लेना चाहिये कि प्रत्येक शब्द जो हम मुंह से निकालते हैं या मन में सोचते हैं तथा प्रत्येक कर्म जो हम करें वह यह समझ कर करें कि वह समस्त राज्य और उसमें रहने वाले लोगों के हितों के अनुकूल हो और ऐसा कोई काम न करें जो देश अथवा राष्ट्र के सामूहिक हितों के विरुद्ध हो, क्योंकि आन्ध्र देश और आन्ध्र लोग भी भारतीय राष्ट्र का ही एक महत्वपूर्ण अङ्ग हैं।

मेरी यह कामना है और यह प्रार्थना है कि आन्ध्र देश के लोग तथा नेतागण को भगवान वह बुद्धि, साहस तथा आत्मत्याग प्रदान करे जिससे कि नवजात राज्य से लोगों की जो महान् आशाएं हैं वह पूरी हो सकें।

नौसेना के वार्षिक समारोह के अवसर पर

[अगस्त, १६५३]

इस प्रसन्नता के अवसर पर मैं अपनी नौसेना के अफसरों और सैनिकों को बड़े हर्षपूर्वक अपनी बधाइयां भेजता हूं। सचमुच यह बड़े गर्व की बात है कि हमारी नौसेना ने इतने थोड़े समय मे ही ऊंचे दर्जे की कार्यकुशलता दिखाई है और उन सब लोगों से प्रशंसा प्राप्त की है जो उसके सम्पर्क में आये हैं। हमारी नौसेना के ऊपर, देश के विस्तीर्ण समुद्र तट की रक्षा का महान भार है और मुझे इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि हमारी इस नव-निर्मित नौसेना के अफ़सर और सैनिक अपने कर्त्तव्य का पालन बड़ी खूबी के साथ करेंगे।

(३०)

स्वाधीनता दिवस के अवसर पर

[१५ अगस्त, १९५३]

अपनी स्वाधीनता की छठी वर्ष गांठ के शुभ दिन, आइये हम अपने देश वासियों की सुख-समृद्धि और समस्त संसार की भलाई के महान कार्य में तन मन अर्पण करने का संकल्प करें। हमारी स्वाधीनता ने हमे यह अधिकार ही नहीं दिया है बल्कि महान उत्तर दायित्व भी सौंपा है। हमने ऐसे सिद्धान्तों को अपनाया है जिनसे अपने ही राष्ट्र की नहीं, मनुष्य मात्र की शान्ति और समृद्धि स्थापित होगी। हमे संतोष है कि हमारे अकिंचन प्रयासों की सफलता के लक्षण, विशेषकर कोरिया में, दिखायी पड़ने लगे हैं।

यह भी हमारे लिए कुछ कम महत्व की बात नहीं कि अपने पड़ोसी देशों से, विशेष रूप से पाकिस्तान से, हमारे सम्बंध अच्छे होते जा रहे हैं। दोनों देशों के बीच न केवल तनाव घटा है बल्कि पड़ोसीपन का सद्भाव भी फैल रहा है। हमें आशा करनी चाहिये कि आपसी विवादों को सुलझाने के लिये हाल ही में जो बातचीत शुरू हुई है वह सफल होगी और इससे दोनों पक्षों को सन्तोष होगा। सफलता असफलता का खयाल न करते हुये हम सभी अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों को आपस की बातचीत से ही निपटाने पर विश्वास करते हैं।

अपने संविधान में हमने देश में लोक कल्याणकारी राज्य स्थापित करने का प्रण किया है। इस लक्ष्य को जल्दी से जल्दी सिद्ध करने के लिए हम कोई बात उठा न रक्खेंगे। राज्य और किसान के बीच के वर्ग की समाप्ति के काम में अधिकाश राज्यों में काफी प्रगति हुई है। जमीदारिया खतम की जा चुकी हैं या की जा रही हैं। सम्पत्ति की असमानता दूर करने के लिये महत्वपूर्ण कानून संसद के सामने पेश है। मजदूरों की भलाई के कानून बनाने में भी प्रगति हुई है। इसी महीने देश की हवाई कम्पनियों को सरकारी प्रबंध में लेकर एक बुनियादी उद्योग का राष्ट्रीयकरण किया गया है।

जो काम हुआ है वह महत्व का है, किन्तु भारत से गरीबी, भूख और अशिक्षा को मिटाने के लिए हमें अभी बहुत कुछ करना है। इसके लिए हमारी सरकार को और प्रत्येक देशवासी को पूरी शक्ति लगानी होगी। आजकल पंच-वर्षीय योजना और सामूहिक योजनाओं पर काम चल रहा है

और इनमें अच्छी प्रगति हुई है। आज इन्हीं पर सारे राष्ट्र की आशायें केन्द्रित है। यह न भूलिये कि जनता के सहयोग से ही इन योजनाओं को पूरा किया जा सकता है।

विदेश में रहने वाला हमारा हरएक नागरिक अपने देश का प्रतिनिधि है। उसका कर्त्तव्य है कि अपने देश के नाम को ऊचा रखे और देश की उच्चआकांक्षाओं को पूरा करने मे हाथ बटाये।

आज इस खुशी के दिन पर मैं अपने सब देशवासियों और विदेशों मे रहने वाले भाइयों को बधाई और हर्ष का संदेश भेजता हूं।

गणराज्य दिवस पर संदेश

[२६ जनवरी, १९५४]

भारतीय गणराज्य की इस चौथी वार्षिक जयन्ती के शुभ अवसर पर मै अपने सभी देशवासियों का अभिनन्दन करता हूँ और उन्हें अपनी हार्दिक शुभकामनायें अर्पित करता हूं।

राष्ट्रोन्नति एवं पुनर्निर्माण के क्षेत्र मे गत वर्ष हम सबने जो प्रयास किया तथा उस प्रयास मे हमें जो सफलताऐं मिलीं, वे हमारे लिए संतोषप्रद कही जा सकती हैं। कई बातों में, गणराज्य का चौथा वर्ष, उसके तीसरे वर्ष की अपेक्षा कहीं अधिक घटनापूर्ण रहा है। मुझे तनिक भी संदेह नहीं कि आज से जिस वर्ष का समारम्भ हो रहा है, उसमें हमारे प्रयत्नों के और भी अधिक फल निकलेंगे, जो हम सबके लिए और समस्त मानवता के लिए भी लाभदायक होंगे। यद्यपि यह हम जानते हैं कि एक ऐसे जनहितकारी राज्य की स्थापना के लक्ष्य की सिद्धि के लिए जिसमें ग़रीबी और अज्ञान के लिए स्थान न हो तथा सभी को समान अवसर प्राप्त हो, अभी हमें बहुत काम करना है; किन्तु फिर भी, हम इस बात से खुश हो सकते हैं कि हमने सही रास्ते पर कदम बढ़ाया है। यदि हम धैर्य और उत्साह के साथ बढ़ते गये, तो हमें निश्चय ही समझना चाहिए कि हमारे प्रयत्न बेकार न जायंगे।

निश्चय ही आज का दिन हमारे लिए खुशी मनाने का दिन है, किन्तु यदि सही मानों में देखा जाय तो यह हमारे लिए आत्मार्पण का दिवस भी है।

राष्ट्र की सेवा— इस महान् देश में रहने वालों की सेवा—का व्रत लेकर हम आजके इस हर्षोत्सव को वास्तविक महत्व प्रदान कर सकते हैं। अपने स्वार्थ से पहले दूसरों के हित का खयाल करना स्वयं अपने हित की रक्षा का भी सर्वोत्तम उपाय है। मेरी हार्दिक इच्छा है कि हममें से हरएक को यह सत्य कभी न भूलना चाहिए। मेरी प्रार्थना है कि नवीन वर्ष आप सबको और अधिक सुखी तथा सम्पन्न बनाए।

देश से बाहर रहने वाले भारतीयों के लिए संदेश

[२६ जनवरी, १९५४]

अपने गणराज्य की इस चौथी वार्षिक जयन्ती के अवसर पर मैं उन सभी भारतीय राष्ट्र-जनों का अभिनन्दन करता तथा उन्हें अपनी शुभकामनाएं अर्पित करता हूं, जो आज देश से बाहर हैं। पिछला वर्ष हमारे लिए कई दृष्टियों से घटनापूर्ण रहा है और शान्ति-स्थापना के लिए अन्य राष्ट्रों के साथ हमारे सहयोग के क्षेत्र में यह बात खास तौर से लागू होती है। संयुक्त-राष्ट्र संघ का उपयोग करते हुए, हमारी सरकार ने कोरिया का युद्ध समाप्त कराने के लिए वह सभी कुछ किया जो वह कर सकती थी। लड़ाई-बंदी के परिणामस्वरूप जब युद्ध समाप्त हुआ, तो हमसे युद्धबंदियों का प्रश्न निपटाने के मामले में सहायता देने को कहा गया, और हमने यह दायित्व संभालना भी स्वीकार किया। यह कार्य चाहे जितना भी कठिन हो या उसमें कितनी भी बुराई मिले, किन्तु भय या पक्षपात के बिना हम आज भी वहां अपना कर्तव्य निभा रहे हैं।

स्वयं भारत में पिछले वर्ष ऐसी असाधारण स्थिति रही है कि उससे हमें आगे के लिए आशा एवं विश्वास प्राप्त होता है। खाद्य-स्थिति में काफ़ी सुधार हुआ है, जिसके बल पर हम कह सकते हैं कि खाद्यों के मामले में आत्मभरित बनने का जो लक्ष्य हमने निर्धारित किया था, वह अब अधिक दिनों तक हमसे दूर नहीं रह सकता। आयोजन तथा निर्माण-कार्य के अन्य व्यापक क्षेत्र में भी प्रगति हुई है, जो कम उत्साहवर्धक नहीं। पंचवर्षीय योजना तथा सामूहिक योजनाओं के काम में संतोषजनक प्रगति हो रही है।

इनकी जिस कद्र भी पूर्ति हुई है, उसका नतीजा हमें उत्पादन के क्षेत्र में देखने को मिला है और कई आवश्यक जिन्सों का उत्पादन निर्धारित लक्ष्यों से भी आगे बढ़ गया है।

घर में हुई इस सारी प्रगति का हाल जानकर आप सब को खुशी होगी, किन्तु मैं आपको यह याद दिलाना चाहता हूं कि आपका देश आप से क्या आशा रखता है। भारतीय गणराज्य के राष्ट्रजन की हैसियत से आपको सचेत रहना है और दिन प्रतिदिन के अपने कार्यों को सुन्दरता के साथ सम्पन्न करना है। इसका कारण यह है कि जिन विदेशियों के बीच आप रह रहे हैं, वे आपके व्यवहार को ही देखकर भारत के विषय में अपना मत कायम करेंगे।

ग़रीबी और निरक्षरता को मिटाने के लिए इस देश में हम जो प्रयत्न कर रहे हैं, उनमें ईश्वर हमें सफलता प्रदान करे। मेरी प्रार्थना है कि इस देश के सभी राष्ट्रजन, चाहे वे देश में हों या विदेश में, भारत में एक जनहितकारी राज्य की स्थापना के लिए पूरे उत्साह एवं बुद्धिमत्ता के साथ अनवरत गति से यत्नशील हों।

साहित्य, कला तथा संस्कृति

भारतीय लोक कला मंडल

[२७ जून, १९५२]

मुझे इस बात को जानकर प्रसन्नता हुई कि भारतीय लोक कला मण्डल की स्थापना इस हेतु हुई है कि भारतीय लोक कला की कृतियों का संकलन करके उनकी रक्षा की जाये। यह निधि अत्यन्त मूल्यवान है और यदि इसकी उचित प्रकार से रक्षा की गई तो यह हमारे लिये लाभदायक सिद्ध होगी। मेरी कामना है कि मण्डल अपने प्रयास में सफल हो।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

[२ अगस्त, १९५२]

हिन्दी भारतीय संघ की राजभाषा है। अतः यह वांछनीय है कि अहिन्दी भाषी प्रान्तों के लोगों को हिन्दी पढ़ाने का समुचित प्रबन्ध हो। मुझे इस बात से प्रसन्नता है कि राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की दिल्ली शाखा इस बारे में दिल्ली में कार्य कर रही है। मेरी सत्कामना है कि सभा अपने कार्य में दिन प्रतिदिन उन्नति करे और अपने उद्देश्य को पूरा करने में सफल हो।

वैदिक रिसर्च इंस्टीट्यूट

[२९ अक्टूबर, १९५२]

वैदिक रिसर्च इंस्टीट्यूट, भारतीय वाङ्मय और इतिहास के क्षेत्र में विभाजन से पूर्व पंडित विश्वबन्धु जी के निर्देशन में प्रशसनीय कार्य करता रहा है। विभाजन से इस संस्था को लाहौर से उखड़ना पड़ा और इसे काफी कठिनाइयों का मुकाबला करना पड़ा। मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि अब इस संस्था का फिर अपना नियत स्थान हो गया है और यह अपने मिशन को पूरा करने में फिर लग गई है।

संस्था के सुन्दर भविष्य के लिये मैं अपनी सत्कामनायें भेजता हूँ।

राजापुर के शिष्टमंडल के प्रति

[१३ नवम्बर, १९५२]

मुझे बहुत खेद है कि मैं राजापुर नहीं पहुंच सका और प्रातः स्मरणीय गोस्वामी तुलसीदासजी से इतना घनिष्ट सम्बन्ध रखने वाले स्थान का दर्शन नहीं कर पाया। मुझे यह सुनकर दुःख पर आश्चर्य नहीं हुआ कि वहा के लोगों ने उस दिन के समारोह के लिये बड़ी तैयारियां की थीं और वहां जनता की भारी भीड़ जुटी थी और मेरे न जाने की वजह से लोग हतोत्साह हुए और उनमें निराशा हुयी। मैं अपने स्वास्थ्य की इस कमजोरी के लिये जिस ने मुझे वहां नहीं जाने दिया क्षमा चाहता हूँ, क्योंकि इच्छा की कमी नहीं थी और अस्वस्थता ने ही न जाने पर मजबूर किया।

मैंने सुना है कि यमुना जी का बहाव कुछ ऐसा हो रहा है जिससे मन्दिर खतरे में आगया है। पर यह सुन कर प्रसन्नता हुयी कि उसकी रक्षा का प्रबन्ध किया जा रहा है। मैं आशा करता हूँ इस स्तुत्य प्रयत्न में पूरी सफलता मिलेगी और इसमें सभी लोग सहायता प्रदान करके यश के भागी बनेंगे। गोस्वामी जी के ग्रन्थों का अध्ययन और मनन सैकड़ों वर्षों से करोड़ों आदमी करते आये हैं और न मालूम कितनों के जन्म सार्थक बनाने में उन्होंने सहायता दी है। ऐसे सन्त और कवि के स्मारक स्थान को सुरक्षित रखने की सब की इच्छा और प्रयत्न होना चाहिये।

वनस्थली विद्यापीठ

[२१ दिसम्बर, १९५२]

भारत में महिला शिक्षा के क्षेत्र में जिन संस्थाओं ने अच्छा कार्य किया है उनमें वनस्थली विद्यालय भी है। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि वह अपना सतरहवां वार्षिकोत्सव मनाने जा रहा है। मुझे आशा है कि विद्यालय के अभिभावकगण भविष्य मे उसे और भी सफल बनाने का पूरा प्रयास करेंगे। मेरी सत्कामनाएं उनके साथ हैं।

गुजराती साहित्य परिषद

[२१ दिसम्बर, १९५२]

प्रादेशिक भाषाएं भारतीय चेतना के विकास के लिये सुन्दर और सफल साधन रही हैं और मुझे पूरा विश्वास है कि इस सम्बन्ध में भविष्य में भी उनकी सेवा अत्यन्त मूल्यवान होगी। गुजराती ने इस दिशा में बड़ा महत्वपूर्ण कार्य किया है। अतः यह जानकर मुझे अत्यन्त हर्ष हुआ कि गुजराती साहित्य परिषद् का अठारहवां सम्मेलन हो रहा है। मैं सम्मेलन की पूर्ण सफलता के लिये अपनी शुभकामनाएं भेजता हूँ।

मैरिस कालेज की रजत जयन्ती

[१५ जनवरी, १९५३]

मैरिस कालेज आफ हिन्दुस्तानी म्यूज़िक की रजत जयन्ती समारोह का उद्घाटन करने के लिये मैं लखनऊ गया था किन्तु वहां सहसा अस्वस्थ हो जाने के कारण मैं उस समारोह में भाग नहीं ले सका जिसका मुझे बहुत खेद है। मैरिस कालेज आफ हिन्दुस्तानी म्यूज़िक भारतीय संगीत को पुनर्जीवित करने के लिये अनथक प्रयास करता रहा है और अपने जीवन के इन दिनों में उसे इस दिशा में पर्याप्त सफलता भी मिली है। सन् १९२६ में जब इसकी स्थापना हुई थी तब इसमें केवल १३ विद्यार्थी और ७ अध्यापक थे। ये विद्यार्थी भी पर्याप्त प्रयत्न करने से ही इसमें प्रविष्ट हुए थे। किन्तु आज इसमें लगभग ३५० विद्यार्थी हैं और अध्यापकों की संख्या भी काफी बढ़ गई है और संगीत के हर विभाग की शिक्षा इसमें प्रदान की जाती है तथा लंका, नैपाल और मारीशस जैसे सुदूर प्रदेशों से यहां विद्यार्थी आये हुए हैं। मुझे आशा है कि यह विद्यालय भविष्य में भी भारतीय संगीत की सेवा सफलतापूर्वक करता रहेगा। मेरी सत्कामना है कि इसका भविष्य सुन्दर हो और यह दिन प्रति दिन उन्नति करता रहे।

उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन

[१४ फरवरी, १९५३]

हिन्दी के संघ की राजभाषा स्वीकार हो जाने के पश्चात् सब हिन्दी सेवियों का यह कर्तव्य हो गया है कि वे उसको समृद्ध बनाने और उसका प्रसार करने में जुट जायें और क्षण भर के लिये भी अपने व्यक्तिगत स्वार्थ की बात न सोच कर सर्वदा उसका भण्डार भरने में लगे रहें। मुझे आशा है कि उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन अपने सदस्यों को इस पथ पर अग्रसर होने के लिये प्रेरणा और स्फूर्ति प्रदान करेगा। उसकी सफलता के लिये मैं अपनी सत्कामनायें भेजता हूँ।

[३१ मई, १९५४]

मैं उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आगामी अधिवेशन की सफलता की कामना करता हूं। मुझे आशा है कि उत्तर प्रदेश में हिन्दी की उन्नति करने के उपायों पर विचार करने के साथ साथ आपका सम्मेलन हिन्दी के प्रश्न पर अखिल भारतीय दृष्टिकोण से विचार करेगा। हिन्दी उत्तर प्रदेश के लोगों की मातृभाषा है, किन्तु यह हमारे देश की राष्ट्रभाषा भी है। इसलिये मेरे विचार से इस भाषा की प्रगति के लिये जो कुछ भी किया जाये वह इन दोनों बातों को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिये। हिन्दी अब केवल हिन्दी भाषियों की भाषा न रहकर भारतीय भाषा होने जा रही है और अहिन्दी भाषियों का योगदान और सेवा इसके लिये उतनी ही वांछनीय है जितनी हिन्दी भाषियों की। उनको उस सेवा की ओर आकृष्ट करने में हिन्दी भाषियों का गौरव और हिन्दी का हित निहित है।

हिन्दी भाषा और साहित्य के निर्माण में कई शताब्दियों से उत्तर प्रदेश का प्रमुख भाग रहा है। मैं आशा करता हूँ कि वर्तमान काल में जब कि हिन्दी समस्त राष्ट्र की भाषा स्वीकार कर ली गई है, उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन हिन्दी को आ बढ़ाने में विशेष रूप से यत्नशील होगा।

पश्चिम बंग राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

[१० अगस्त, १९५३]

पश्चिम बंग राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के नवम् समावर्तन उत्सव के अवसर पर प्रमाणप्रत्र, उपाधिपत्र और पुरस्कार पाने वाले सभी छात्र छात्राओं, को मैं बधाई देता हूँ। मुझे आशा है कि हिन्दी शिक्षण और प्रचार कार्य में वे बराबर दिलचस्पी लेते रहेंगे।

किसी भी भाषा के प्रचार द्वारा निरक्षरता निवारण का कार्य स्तुत्य है, परन्तु अहिन्दी भाषा भाषी क्षेत्रों में राजभाषा हिन्दी का प्रचार हमारे राष्ट्रीय कार्यक्रम का एक अंग है। समृद्ध साहित्य और स्थानीय परम्पराओं से सम्पन्न विभिन्न भाषाओं के बोलने वाले भारतीय गणतन्त्र के राज्यों को जो तत्व एकता के सूत्र में बांधते हैं, हिन्दी भी उनमें से एक है। देश की आधुनिक आर्य भाषाओं और हिन्दी के विकास में पहले बहुत कुछ संस्कृत द्वारा साहश्य रहा है। इन भाषाओं का ही नहीं बल्कि द्रविड़ भाषाओं का शब्द भंडार भी उसी कारण से हिन्दी के शब्द भंडार से काफी मिलता जुलता है। यही कारण है कि हिन्दी इन भाषाओं से भिन्न होते हुए भी इनसे बहुत दूर नहीं है।

हमारे संविधान में भाषा-सम्बन्धी जो व्यवस्था की गयी है उसके अनुसार हिन्दी देश की राजभाषा है परन्तु प्रान्तीय भाषाओं का स्थान अक्षुण्ण रखा गया है। अहिन्दी भाषा भाषी क्षेत्रों में क्षेत्रीय भाषाओं और हिन्दी के बीच किसी प्रकार के संघर्ष की गुजांइश नहीं है। दोनों का क्षेत्र पृथक है और दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।

मुझे प्रसन्नता है कि पश्चिम बंग राष्ट्रभाषा समिति हिन्दी के प्रचार कार्य को तत्परता से कर रही है। मैं आशा करता हूं कि उसे दिनोंदिन इस सत्कार्य में सफलता तथा प्रोत्साहन मिलेगा।

पंजाबी के वयोवृद्ध कवि

[२४ अगस्त, १६५३]

पंजाबी के वयोवृद्ध कवि श्री भाई वीरसिंह की रचनाओं और उनके साहित्य प्रेम के सम्बन्ध में जानकर मुझे प्रसन्नता हुई। अधुनिक पंजाबी साहित्य में ठीक ही उनका ऊंचा स्थान है।

गत ५० वर्ष से भाई वीरसिंह के साहित्य सृजन के कारण ही पंजाबी साहित्य पनप सका है। यह जान कर मुझे विशेष प्रसन्नता हुई कि भाई साहब की कविताओं का एक संग्रह दो वर्ष हुए देवनागरी अक्षरों में भी प्रकाशित हुआ था जिसका सभी ओर से स्वागत किया गया। भाई वीरसिंह के सभी ग्रन्थ गुरुमुखी अक्षरों में होने के कारण पंजाबी से परिचित साहित्य सेवी ही उनका रसास्वादन कर सके हैं। उनकी चुनी हुई कृतियों को देवनागरी अक्षरों में प्रकाशित करने के सत्प्रयास का मैं स्वागत करता हूँ और इसके लिये भाई वीरसिंह अभिनन्दन ग्रन्थ समिति को बधाई देता हूँ।

भारतीय हिन्दी परिषद

[६ अक्टूबर, १६५३]

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि भारतीय हिन्दी परिषद् का वार्षिक अधिवेशन पटना में होने जा रहा है। यह आयोजन बिहार राष्ट्र भाषा परिषद्, पटना विश्वविद्यालय तथा बिहार विश्वविद्यालय के सम्मिलित तत्वावधान में हो रहा है। इस कारण इसका और भी अधिक महत्व है।

सभी हिन्दी सेवियों का ध्यान मैं एक बात की ओर आकृष्ट करना चाहूँगा। हिन्दी भाषा और साहित्य की श्रीवृद्धि अब किसी वर्ग विशेष अथवा किसी क्षेत्र विशेष की जिम्मेदारी न रहकर समस्त राष्ट्र का दायित्व है। हो सकता है सभी लोग इस बात को पर्ण रूप से न समझते हों, परन्तु इसे ठीक ठीक समझाने का दायित्व हिन्दी भाषा भाषी लोगों और हिन्दी सेवियों पर आता है। हिन्दी परिषदों तथा सम्मेलनों में जहां साहित्य तथा भाषा के

प्रचार सम्बन्धी अनेक समस्याओं पर विचार होता है, वहा इस बात की ओर भी ध्यान देना आवश्यक है कि जनता, विशेषकर अहिन्दी भाषा भाषी जनता हिन्दी के महत्व को समझे और इस सम्बन्ध में यदि किन्ही कारणों से कोई आशंका हो तो उसका समाधान किया जाये। कहने का अभिप्राय यह है कि राष्ट्रीय क्षेत्र में हिन्दी को विवाद के स्तर से ऊपर उठाया जाये।

मुझे आशा है कि भारतीय हिन्दी परिषद् में भाग लेनेवाले विद्वज्जन इस बात को समझेंगे और हिन्दी वाङ्मय की सर्वांगीण उन्नति करने के उपायों के साथ साथ देश में हिन्दी को सार्वभौम मान्यता किस प्रकार मिले इस पर भी विचार करेंगे। यह उद्देश अहिन्दी भाषा भाषियों के प्रेम, सद्भावना और तत्परता से ही पूरा हो सकता है और हिन्दी भाषियों का कर्तव्य है कि उनके प्रेम और सद्भावना को प्राप्त करें।

भारतीय हिन्दी परिषद् के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर मैं अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं और आशा करता हूँ कि यह आयोजन सफल होगा।

पोद्दार अभिनन्दन ग्रन्थ

[२४ अक्टूबर, १९५३]

हमारी संस्कृति और साहित्य मे ब्रज भूमि का स्थान बहुत ऊंचा है। जब से मथुरा में ब्रज साहित्य मंडल की स्थापना हुई है, स्वभावतः सभी साहित्यकारों का ध्यान ब्रज भाषा, ब्रज साहित्य और ब्रज कला के संवर्धन तथा संरक्षण की ओर गया है। इस सम्बन्ध में मंडल की जो योजनाएं हैं उनमें भवन निर्माण का कार्य सर्व प्रथम है। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि इस दिशा में श्री कन्हैयालाल पोद्दार के सहयोग से ब्रज साहित्य मंडल को पर्याप्त सफलता मिली है। पोद्दार अभिनन्दन ग्रन्थ यद्यपि कन्हैयालालजी के सम्मानार्थ प्रकाशित हुआ है, वास्तव मे यह ब्रज साहित्य और ब्रज कला सम्बन्धी सामग्री का अमूल्य संग्रह है। साहित्यकारों ने उनसे प्रेरणा पायी और पाठकों के लिये ऐसी सुन्दर रचना प्रस्तुत की, इसके लिये मैं पोद्दारजी तथा ब्रज साहित्य मंडल को बधाई देता हूं।

चित्रकला संगम द्वारा आयोजित प्रदर्शनी

[२३ अक्टूबर, १९५३]

चित्रकला संगम के तत्वावधान में होने वाली चित्रकला प्रदर्शनी तथा अखिल भारतीय फोटो प्रतियोगिता का मैं स्वागत करता हूँ। यह आयोजन सराहनीय है। कला मानव के सर्वांगीण विकास का उत्तम साधन है। आधुनिक युग में जनसाधारण के लिये कला की जानकारी और भी आवश्यक है। इसके द्वारा मानव का बौद्धिक तथा आध्यात्मिक विकास होता है, और उद्बुध सामाजिक चेतना को प्रोत्साहन मिलता है।

कला, संस्कृति और शिक्षण में गहरा पारस्परिक मेल है, और इनमें से प्रत्येक समान रूप से महत्वपूर्ण है। इसलिये इस बात की आवश्यकता है कि कला का प्रसार समाज के उच्च वर्ग तक ही सीमित न रहे बल्कि जनसाधारण में भी किया जाय। इस दृष्टि से भी चित्रकला संगम की स्थापना और उसका यह प्रयास प्रशंसनीय है।

इस प्रदर्शनी और प्रतियोगिता के लिये मैं अपनी शुभकामनाएं भेजता हूँ और आशा करता हूं कि यह आयोजन सफल होगा।

बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन

[७ अक्टूबर, १९५३]

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन अगले सप्ताह जमशेदपुर में हो रहा है। हिन्दी के प्रचारार्थ और साहित्य की श्रीवृद्धि के हेतु आजकल सभी हिन्दी भाषा भाषी क्षेत्र काफी सक्रिय तथा सचेष्ट हैं। यह हर्ष का विषय है। मैं आशा करता हूं कि इन सम्मेलनों तथा परिषदों में किये जानेवाले विवेचन के फलस्वरूप राष्ट्रभाषा की यथोचित उन्नति होगी।

इस सम्बन्ध में मुझे एक बात और कहनी है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन एक जिम्मेदार सस्था है, जिसने हिन्दी भाषा और साहित्य की बहुत सेवा की है। हिन्दी के राष्ट्रभाषा स्वीकार कर लिये जाने पर सम्मेलन की

प्रमुख मांग मान ली गयी है। इसलिये सम्मेलन का दायित्व अब और भी बढ़ गया है। मुझे आशा है कि सम्मेलन सदा की भांति इस दायित्व को भली प्रकार निभायेगा।

साहित्य दर्पण के समान है जिसमें जनता की भावनाएं, महत्वाकांक्षाएं और सुख दुःख का दैनिक जीवन प्रतिबिम्बित होना चाहिये। मेरा खयाल है कि सुयोग्य साहित्यकारों के प्रोत्साहन द्वारा सम्मेलन इस प्रकार के साहित्य के सृजन के लिये प्रयत्नशील रहेगा।

बिहार साहित्य सम्मेलन के आगामी अधिवेशन को मैं अपनी शुभ कामनाएं भेजता हूं और आशा करता हूं कि यह समारोह सफल होगा।

कालिदास जयन्ती के अवसर पर

[३ नवम्बर, १९५३]

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि अखिल भारतीय संस्कृत परिषद् ने कालिदास जयन्ती मनाने का निश्चय किया है। संस्कृत साहित्य में कालिदास का वही स्थान है जो अंग्रेजी साहित्य में शेक्सपीयर का है। अंग्रेजी में शेक्सपीयर पर इतना अधिक लिखा गया है कि साहित्य के विद्यार्थियों के लिये वह अध्ययन का एक नया विषय बन गया है। यद्यपि संस्कृत के लेखकों और साहित्यकारों ने कालिदास को यथोचित मान्यता दी है, किन्तु अभी तक इस महान् कवि और नाटककार के विषय में इतनी खोज नहीं की जा सकी है जितनी होनी चाहिये। इसलिये अखिल भारतीय संस्कृत परिषद् के इस निर्णय का मैं स्वागत करता हूं और आशा करता हूं कि कालिदास जयन्ती के फलस्वरूप संस्कृत वाङ्मय पर विस्तृत विचार किया जायगा और भारतीय जनता संस्कृत के समृद्ध तथा परिपक्व साहित्य के और निकट आ सकेगी।

इस अवसर पर मैं अखिल भारतीय संस्कृत परिषद् को अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं।

हिन्दुस्तानी एकेडमी की रजत जयन्ती

[३० जनवरी, १९५४]

हिन्दुस्तानी एकेडमी जैसी साहित्यिक संस्था की रजत् जयन्ती निश्चय ही हर्ष का विषय है। हमारे देश में ऐसी संस्थाएं अधिक नहीं जिनको इतने दीर्घकाल तक साहित्य सेवा का अवसर मिला हो। इसलिये हिन्दुस्तानी एकेडमी को मैं बधाई देता हूं और यह कामना करता हूं कि इसका भविष्य अतीत से भी अधिक उज्जवल हो।

इस संस्था का कार्य हिन्दी और उर्दू के साहित्य तथा साहित्यिकों को प्रोत्साहन देना और इन भाषाओं में उपयोगी ग्रन्थ प्रकाशित करना रहा है। गत २५ वर्षों में एकेडमी ने १२१ पुस्तकें प्रकाशित की हैं जो प्राय: विद्वानों और सम्बन्धित विषयों के विशेषज्ञों द्वारा लिखी गयी हैं। यह एक ठोस रचनात्मक कार्य हुआ है।

मेरा विश्वास है कि साहित्य निर्माण के ऐसे शुभ कार्य में हिन्दुस्तानी एकेडमी बराबर आगे बढ़ती जायेगी और मैं आशा करता हूं कि इसके लिये समुचित साधन जुटाने में भी इसे कठिनाई नहीं होगी।

ब्रज साहित्य मण्डल को सन्देश

[१९५४]

अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मंडल के नवम अधिवेशन के अवसर पर मैं मंडल के कर्मचारियों को अपनी शुभ कामनाएं भेजता हूं। ब्रज साहित्य मंडल से मेरा निकट का सम्बन्ध रहा है और सौभाग्यवश इसकी सांस्कृतिक, कला-सम्बन्धी तथा साहित्यिक गतिविधियों से मैं परिचित हूँ। मुझे बहुत प्रसन्नता है कि शीघ्र ही मथुरा में मंडल का स्थायी कार्यालय बनकर तैयार हो जायेगा। यह सब मंडल के कर्मचारियों तथा पदाधिकारियों के अध्यवसाय का सुफल है।

ब्रज भाषा कई शताब्दियों तक उत्तर भारत के अतिरिक्त मध्य तथा पश्चिमी भारत के साहित्य का माध्यम रही है। गुजरात, पंजाब, राजस्थान

और महाराष्ट्र के पुराने साहित्य को ब्रज भाषा ने काफी प्रभावित किया है। इन प्रदेशों की भाषाएं प्रौढ़ावस्था को प्राप्त कर अब निजी मार्गों का अनुसरण कर रही हैं, परन्तु उनके मध्यकालीन साहित्य के ज्ञान के लिये ब्रज भाषा जानना आवश्यक है। इस दृष्टि से, मैं सोचता हूँ, ब्रज साहित्य मंडल ब्रज भाषा के व्यापक प्रचार द्वारा परोक्ष रूप से विभिन्न भारतीय भाषाओं में साम्य स्थापित कर रहा है, जो एक सराहनीय प्रयत्न है।

मैं आशा करता हूँ कि मैनपुरी में होनेवाले मंडल का नवम अधिवेशन सफल होगा और इसके द्वारा ब्रज साहित्य की और भी श्रीवृद्धि होगी।

कुरुक्षेत्र संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना के अवसर पर

[२४ जून, १९५४]

मुझे इस बात का खेद है कि मैं कुरुक्षेत्र में संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना के समय उपस्थित नहीं हो सकता। मेरी इच्छा थी कि मैं अवश्य वहा पर आऊं पर ऐसा नहीं हो सकेगा।

संस्कृत का अध्ययन हमारे लिये आवश्यक है। एक तो संस्कृत का साहित्य भंडार बहुत ही बड़ा और विस्तृत है। विभिन्न विषयों पर इसमें बड़े महत्वपूर्ण ग्रन्थ बिखरे पड़े हैं। सारे देश मे हस्तलिखित ग्रन्थों की प्रतियां भी अनगिनत हैं जो आधुनिक ढंग से प्रकाशित नहीं हो पायी हैं। यह एक सर्वमान्य बात है कि जब से यूरोप में आज से १५०, १७५ वर्ष पहले संस्कृत का अध्ययन आरम्भ हुआ, वहां के लोगों ने अपनी खोज और विद्वत्ता से बहुत सी बातें जिनको हम लोग भूलते जा रहे थे, प्रकाशित कीं। पर यह तो हमारे देश के लोगों का ही काम है कि इस अमित भंडार से केवल स्वयं ही परिचित न हों बल्कि संसार के अन्य देशों के लोगों को भी परिचित कराएं। यह तभी हो सकता है जब उसका पठन पाठन सुचारू रूप से सारे देश में फैले।

इसके अलावा हमारी संस्कृति का आधार भी इसी साहित्य में मिलता है। यद्यपि उसमें और भी बहुत कुछ मिल गया है पर अभी भी उसका मूल उसी में है और यह भी सर्वमान्य है कि हमारी संस्कृति एक विशेषता

रखती है जो केवल हमारे ही लिये नहीं बल्कि संसार के लिये एक अमूल्य वस्तु है। इसलिये जब मैं सुनता हूं कि संस्कृत विद्या के प्रचार और प्रसार के लिये कोई प्रबन्ध किया जा रहा है तो उसमें मेरी दिलचस्पी स्वाभाविक हो जाती है।

मैं आशा करूंगा कि यह महाविद्यालय हमारे प्राचीन पांडित्य को और उसकी शिक्षा पद्धति को सुरक्षित रखता हुआ आज की आधुनिक रीति से भी अपने विद्यार्थियों को तैयार करेगा जिसमें वे प्राचीन और नवीन दोनों का तुलनात्मक विवेचन कर सकें और समाज और देश को उन्नति की ओर अग्रसर करने में सहायक हो सकें। मेरी हार्दिक मनोकामना और प्रार्थना इस विद्यालय की सफलता के लिये है।

कुशीनगर में महाविद्यालय की स्थापना

[२६ जूलाई, १६५४]

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि सरदार सुरेन्द्रसिंह मजीठिया की उदारता और बाबा राघवदास तथा दूसरे लोगों के उत्साह से कुशीनगर कसया, जिला देवरिया में एक ऐसी संस्था की स्थापना का प्रयत्न किया जा रहा है जिसमें एशियाई, विशेषकर पूर्वी एशियाई भाषाओं की शिक्षा का प्रबन्ध रहेगा। हमारा सम्पर्क उन सभी देशों के साथ बढ़ता जा रहा है और निकट भविष्य में और भी गम्भीर होने वाला है। प्राचीन काल में सांस्कृतिक आदान प्रदान हमारे देश और उन देशों के बीच होता आया है। पर कुछ शताब्दियों से परिस्थितियों के कारण यह रुक गया था। अब फिर नये रूप और नये ढंग से हमारा और उनका सांस्कृतिक सम्बन्ध बढ़ेगा। इसके लिये यह आवश्यक है कि इस देश के निवासी उन देशों की भाषा, साहित्य आदि से कुछ परिचय प्राप्त करें और अगर हो सके तो उन देशों के कुछ निवासियों को भी इस देश की भाषा, इतिहास, साहित्य इत्यादि के साथ परिचय करावें। विचार है कि कुशीनगर में जो बुद्ध भगवान का महापरिनिर्वाण स्थान है इस उद्देश्य से एक महाविद्यालय की स्थापना की जाये। मैं आशा करूंगा कि यह विद्यालय योग्य अध्यापकों का सहयोग प्राप्त कर सकेगा और सरकारी तथा जनता की मान्यता प्राप्त करके विद्यार्थियों को आकर्षित कर सकेगा। मैं उसकी पूरी सफलता चाहता हूं।

अखिल भारतीय हिन्दी दिवस

[११ सितम्बर, १९५४]

वर्धा की राष्ट्र भाषा प्रचार समिति द्वारा १४ सितम्बर को अखिल भारतीय हिन्दी दिवस मनाने के निश्चय का सभी देशवासी हृदय से स्वागत करेंगे। १४ सितम्बर का हमारे इतिहास में विशेष महत्व है। उस दिन स्वतंत्र भारत की संविधान परिषद् ने सर्व सम्मति से हिन्दी को देश की राष्ट्रभाषा घोषित किया था। जिस देशभक्ति और सहिष्णुता की भावना से प्रेरित होकर हमारे अहिन्दी भाषा भाषियों ने हिन्दी के पक्ष में मत दिया, वह स्वतंत्र भारत के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगी। आज जबकि हम राष्ट्रभाषा सम्बन्धी घोषणा की वर्षगांठ मना रहे हैं और राष्ट्रभाषा प्रचार का देश भर में आयोजन कर रहे हैं, हमें अहिन्दी भाषा भाषी क्षेत्रों और संविधान परिषद् में उनके प्रतिनिधियों के प्रति आभार प्रगट करना चाहिये।

हिन्दी भाषियों को इसका ध्यान रखना चाहिये कि उनकी ओर से कोई ऐसा काम न हो और न कोई ऐसे भाव प्रगट किये जांय जिनसे यह मालूम हो कि हिन्दी अहिन्दी भाषियों पर लादी जा रही है अथवा इसके प्रचार मे किसी प्रकार से लेश मात्र भी उनकी स्वेच्छा के विरुद्ध कुछ भी किया जानेवाला है, क्योंकि हमारी सारी संस्कृति इसी आधार पर बनी है कि सबको पूरी स्वतंत्रता अपनी भाषा इत्यादि के संबन्ध में है और उसी स्वतत्रता द्वारा वे हिन्दी को अपना रहे हैं, न कि किसी प्रकार के दबाव से। इसी रीति से प्रचार का काम तेजी और सफलता पूर्वक प्रगति करेगा। यह आज के दिन विशेष करके याद रखना उचित है। मुझे पूर्ण आशा है कि राष्ट्रीय एकता और पारस्परिक सद्भावना को ध्यान में रखते हुए हमारे सभी देशवासी राष्ट्रभाषा प्रचार के रचनात्मक कार्य में स्वेच्छा से योगदान देंगे।

मराठी साहित्य सम्मेलन को सन्देश

[३० सितम्बर, १९५४]

मराठी साहित्य सम्मेलन के ३७ वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर मराठी साहित्यिक तथा सांस्कृतिक महोत्सव के आयोजन का मैं स्वागत करता हूँ और

इस अवसर पर मराठी कलाकारों तथा विद्वानों का अभिनन्दन करता हूँ। हमारे देश की प्रादेशिक भाषाओं में मराठी का बहुत ऊंचा स्थान है। मराठी वाङ्मय के सभी अंग प्रत्यंग समृद्ध कहे जा सकते हैं। यह बड़े हर्ष का विषय है कि मराठी और दूसरी भाषाओं में, विशेषकर मराठी और हिन्दी में, काफी आदान प्रदान रहा है जिसके कारण ये भाषाएं एक दूसरे को प्रभावित कर सकी हैं। हिन्दी की भांति, मराठी का सन्त वाङ्मय भी उसकी बहुमूल्य निधि है। वास्तव में, वह ऐसी निधि है जिससे भले ही मराठी भाषा का आरम्भ हुआ हो, परन्तु जिसे दूसरी भाषाओं में भी मान्यता प्राप्त है। मेरा अभिप्राय सन्त ज्ञानेश्वर, नामदेव, तुकाराम आदि महान् विभूतियों से है, जिनकी वाणी के प्रभाव को भाषा विशेष की सीमाएं बांध नहीं सकीं।

इस अवसर पर मैं महाराष्ट्र और वहां की पांडित्य परंपरा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि भेंट करना चाहूंगा। आधुनिक युग में संस्कृत भाषा और साहित्य को जीवित रखने में महाराष्ट्र के विद्वानों का बड़ा हाथ रहा है। इसलिये संस्कृत ग्रन्थों के पुनरुद्धार तथा संस्कृत भाषा के अध्ययन को प्रोत्साहन देने के कारण, भारत महाराष्ट्र का ऋणी है।

यह हर्ष का विषय है कि इधर मराठी साहित्य की और भी श्रीवृद्धि हो रही है। मैं आशा करता हूं कि मराठी साहित्य के सभी अंग दिनोंदिन उन्नति करेंगे और उस उन्नति से महराष्ट्र को ही नहीं बल्कि समस्त देश को बल मिलेगा।

मैं इस महोत्सव की सफलता की कामना करता हूं।